हत्यारा कौन

सुपर कमांडो ध्रुव

याद है न? ये 'क्राइमकोर्ट' है! अद्‌भुत शक्ति-धारक कंकालतंत्र की अदालत...
...जो बैठी है, सुपर कमांडो ध्रुव के हत्यारे का पता लगाने के लिए, और उसको 'परमखलनायक' की उपाधि से विभूषित करने के लिए—
उपस्थित महाखलनायको एवं माफिया सरदारो... मैं कंकालतंत्र; मध्यांतर के दौरान अपने सर्वज्ञानी रोबोट बायोट्रॉन की बैटरी चार्ज कर चुका हूं।
महाखलनायक ध्वनिराज, बौना वामन, और महाखलनायिका ब्लैककैट का यह दावा कि उन्होंने ध्रुव को मारा, खारिज किया जा चुका है।
अब हम डॉक्टर वायरस, सम्राट चुंबा, श्रीमान चंडकाल, ग्रैंडमास्टर रोबो एवं मादाम सुप्रीमा की गवाहियां सुनेंगे...
... और उसके बाद यह फैसला करेंगे कि सुपर कमांडो ध्रुव का...
बायोट्रॉन! कार्यवाही शुरू करो!
महाखलनायक डॉक्टर वायरस! कृपया गवाही देने पधारें!
हत्यारा कौन
कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा: इंकिंग: विनोद कुमार: सुलेख एवं रंग: सुनील पाण्डेय: संपादक: मनीष गुप्ता:

चौथी गवाही-

मैंने मारा ध्रुव को
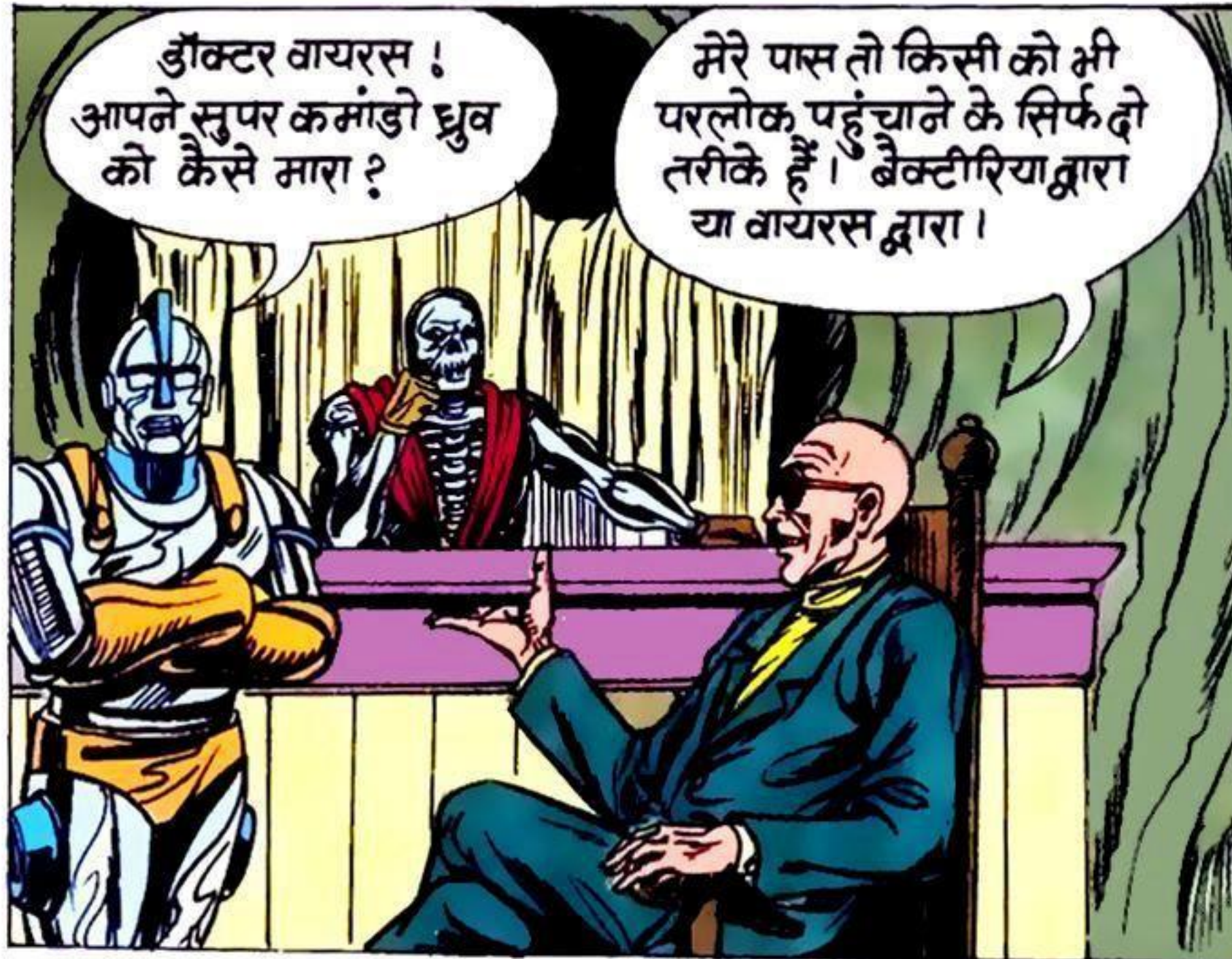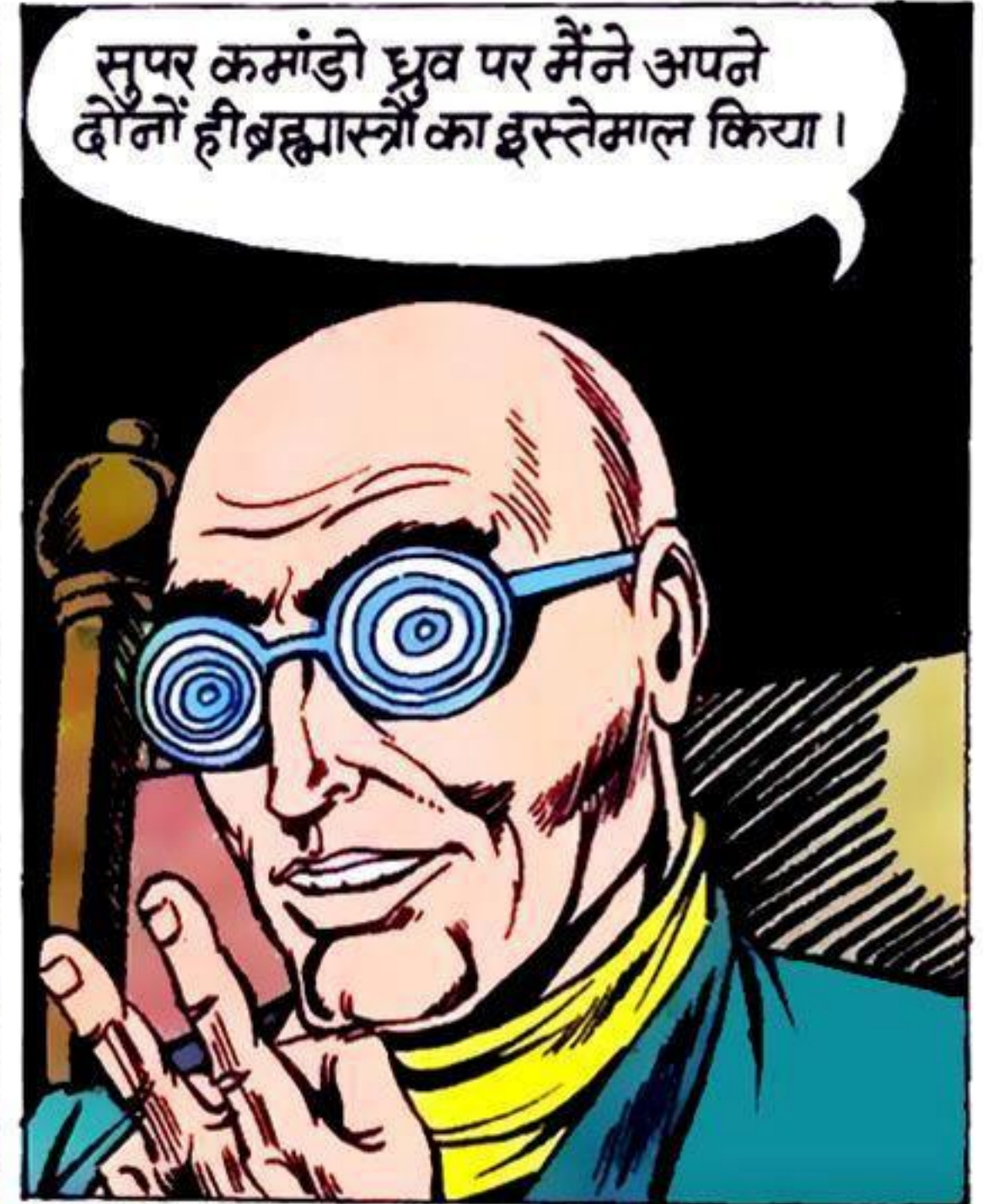
दरअसल मेरा प्लान तो सिर्फ पैसे कमाने के लिए था। सुपर कमांडो ध्रुव तो अपनी मौत को ढूंढता-ढूंढता वहां तक आ गया था—

मैंने राजनगर के उत्तरी भाग में एक लेबोरेट्री बनाई थी—

ऊपरी तौर पर तो उस लेबोरेट्री का मकसद 'माइक्रो बायोलॉजी' में नई-नई रिसर्च करना था—

लेकिन अन्दर की बात तो ये थी, कि वहां पर मैं अपने काम के लिए नए-नए और घातक किस्म के जीवाणुओं एवं विषाणुओं का निर्माण करता था—

लेबोरेट्री में, प्रयोग की आड़ में मैंने चूहे खरीदने शुरू कर दिए। एक जिन्दा चूहे की कीमत में दो रुपए देता था—
गरीब लोगों में चूहे पकड़ने की होड़ लग गई। लोग लाइन लगाकर चूहे बेचने आने लगे। देखते ही देखते मेरे पास हजारों-हजार चूहे इकट्ठे हो गए—
इसी दौरान मैंने अपनी लेबोरेट्री में प्लेग के कीटाणु बेशुमार तादाद में बना लिए थे। आगे का काम आसान सा था—
फिस्स्स
चूहों पर प्लेग के कीटाणुओं का स्प्रे करना...
...और उनको शहर में छोड़ देना—
प्लेग एक ऐसी बीमारी है, जो बला की तेजी से फैलती है—
और जब प्लेग अपना विकराल रूप दिखाता है, तो गिरती हैं लाशें दनादन—
और फैलता है... आतंक!
अंतर्राज्यीय बस अड्डा
मौत के डर से लोग, अपनी सारी बेशकीमती चीजें छोड़कर उस इलाके से ही भाग निकलते हैं।
और पूरा इलाका ऐसे खाली हो जाता है, मानो मरघट का या कब्रिस्तान का दूसरा रूप हो—

सोचो, बायोट्रॉन! उस समय कई करोड़ का माल लूटना कितना आसान होता है। घर का ताला तोड़ो और माल निकालो!
पकड़ने वाला भी कोई नहीं होता। क्योंकि पुलिस वाले भी डर के मारे प्लेग ग्रस्त एरिया में नहीं आते।
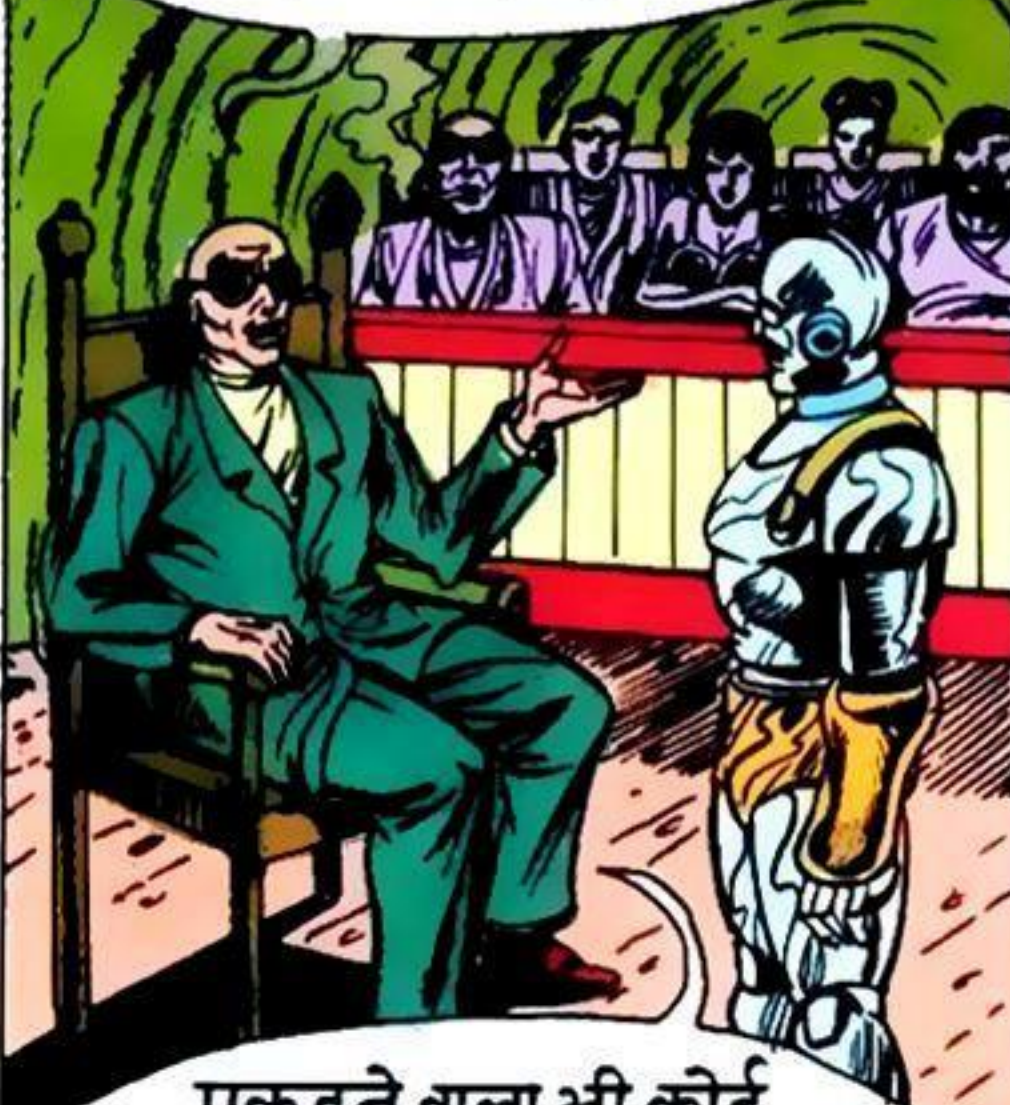
और मेरे आदमियों को रोग लगने का कोई डर नहीं था—
क्योंकि मैंने उनको 'एन्टी-प्लेग' की दवाई दे रखी थी। वे दवाई खाकर ही लूटने जाया करते थे—

काम जल्दी-जल्दी करना था। क्योंकि मुझे मालूम था कि जल्दी ही, सरकार इस प्लेग से निपटने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेगी।
मुझे यह भी खबर मिल चुकी थी कि राजनगर के 'माइक्रो-बायोलाजिस्ट' का एक दल किसी भी वक्त, प्लेग ग्रस्त उत्तरी राजनगर में आ सकता है।

मुझे उससे पहले ही एक दूसरी घातक बीमारी का वायरस बना लेना था, ताकि बीमारियों का यह दौर कभी खत्म न हो—
मेरे पास कई किस्म के घातक जीवाणु तैयार हो गए थे—

और अब मेरे प्लान का दूसरा भाग शुरू हो रहा था—
ये लो! और इसको पूर्वी राजनगर के मेन 'वॉटर सप्लाई टैंक' में मिला दो!
ओ० के० बॉस!

☆ बर्फ मानव... यानी डॉक्टर वर्गीस के बारे में जानने के लिए पढ़ें विशेषांक- 'डॉक्टर वायरस'

पर गोलियां उस बर्फ के जिस्म पर क्या असर करतीं ?
तब तक मैं एक 'फ्लेम थ्रोअर' उठा चुका था—
आग की एक लपट लपक पड़ी बर्फ मानव की तरफ—
अभी मैं तेरे बर्फीले बदन को, उबलते पानी में बदलकर नाली में बहा दूंगा ।
आग, अगर बर्फ को पानी में बदल सकती है, वायरस...
... तो पानी भी आग को बुझा सकता है ।
अब तू अपनी सांसें बचाने की सोच ।
मेरे आदमी चारों तरफ से, बर्फमानव पर टूट पड़े—
आह ! तोड़ डालो इसके बर्फ के बदन को !
फिर देखूं कि ये कैसे बचता है ?
और बर्फ के टुकड़े, टूट-टूट कर हवा में उड़ने लगे ।
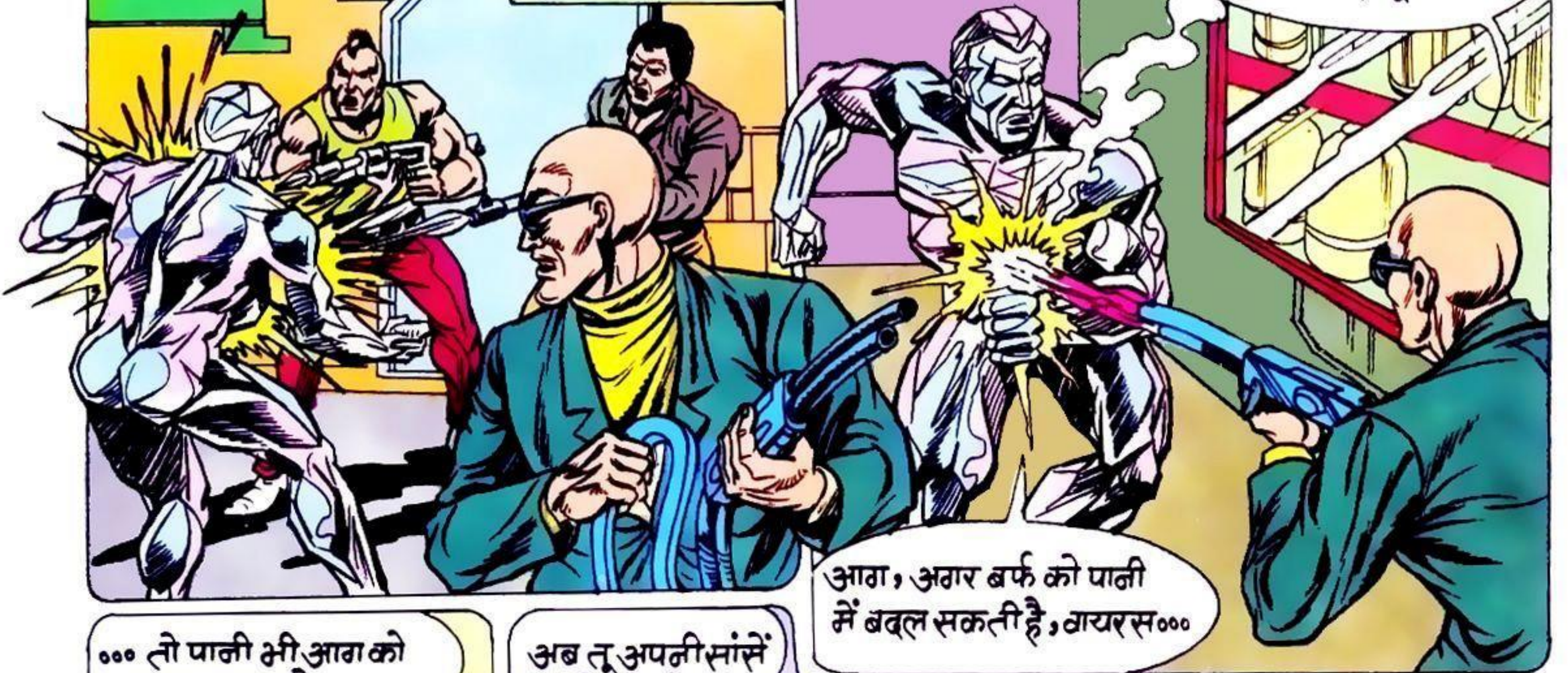
वर्गीस के पूरे शरीर में दरारें पड़ रही थीं—
चार- पांच वारों के अंदर ही वर्गीस का पूरा बदन टुकड़े- टुकड़े हो जाना था—
लेकिन वे चार-पांच वार चलने का मौका नहीं मिला—
न जाने कहां से, वहां पर, वह शैतान का अवतार आ धमका था—
जिसका नाम था...
ता! ड़.
सुपर कमांडो ध्रुव!
हां, मैं! अब तुम पूछोगे कि मैं यहां पर कैसे आ गया? मैं तो दवाइयों से भरा एक ट्रक लेकर उत्तरी राजनगर में आया था, क्योंकि कोई भी ड्राइवर यहां आने को तैयार ही नहीं था।
घड़ाकक
लेकिन रास्ते में मेरी मुलाकात तुम्हारे कुछ आदमियों से हो गई। वे लोग गहनों, पैसों और बेशकीमती चीजों से भरा ट्रक लेकर कहीं जा रहे थे।
बस, मैं उनसे जरा जान-पहचान करने रुक गया!
और जान-पहचान करने के बाद उन्होंने मुझे तुम्हारा नाम और पता बता दिया।

बस, फिर मैं यहां तक आ गया। और अब यहां आ गया हूं, तो तुम्हारी मिजाज-पुर्सी करता ही जाऊं।
अब इनको जरा बड़े जेलखाने की सैर करा दी जाए।
क्या ख्याल है डॉक्टर वर्गीस?
अति उत्तम ख्याल है, ध्रुव!
दोनों, मुझे असहाय समझकर, मेरी ओर बढ़ रहे थे—
लेकिन मैं उतना असहाय नहीं था—
ये घातक वायरस तुमको मुझ तक पहुंचने से पहले ही, जमीन पर गिरा देंगे।
तुम्हारे वायरस मेरी बर्फ की दीवार को पार नहीं कर सकते वायरस।
कोई भी जीवाणु इतनी ठण्ड में मर जाता है।
ये वायरस वे नहीं हैं, वर्गीस! ठण्ड का इन पर कोई असर नहीं होता।
यह सच कह रहा है, ध्रुव! ये वायरस तो बर्फ की दीवार के पार आ रहे हैं।
लेकिन तभी—एक और आश्चर्य हुआ—
इन दुष्ट विषाणुओं पर शीत का प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन मेरी अग्नि इनको झुलसा कर ही छोड़ेगी।

वह 'आग उगलती भट्ठी' जो भी था, ध्रुव उसको जानता था—
सामरी! तुम यहां पर कैसे?
एक मुश्किल सुलझाने, ध्रुव! दरअसल एक चील, एक आधा खाया चूहा हमारी घाटी में गिरा गई—
और उसके संपर्क में आते ही हमारे दो नागरिक बीमार पड़ गए—
हमने उनको ठीक करने की जी-तोड़ कोशिश की। मगर वे अभी भी ज़िन्दगी और मौत के बीच में झूल रहे थे—
उसके तुरंत बाद ही, कुछ और नागरिक भी बीमार पड़ गए—
तब मुझे रोग का कारण पता करने के लिए निकलना ही पड़ा—
चील के आने की दिशा से, मुझे यह आभास हो गया था कि चील इसी नगर की तरफ से आई है—
और यहां पर मुझे तुम मिल गए।
वाह! लगता है कि किसी सर्कस कम्पनी का कोई शो चल रहा है। एक बर्फ फेंकता है, एक आग फेंकता है, एक कलाबाज है।
बस! मैं इस रोग की दवाई की खोज में यहां तक आ गया! पूरे क्षेत्र में सिर्फ इसी इमारत के इर्द-गिर्द चहल-पहल थी—
लेकिन अब यह शो खत्म होने का समय आ गया है। इन दोनों विषाणुओं का मिश्रण तुम तीनों को एक साथ मौत का इनाम देगा।

दो मिनटों के अंदर- अंदर तुम लोगों के सभी अंगों को लकवा मार जाएगा। और फिर तुम लोग, मेरी आंखों के सामने और मेरे ठहाकों के बीच एड़ियां रगड़- रगड़ कर मरोगे।
मेरे वायरसों का मिश्रण सचमुच महाघातक था। क्योंकि उस मिश्रण पर न तो गर्मी का असर होता था और न ही ठण्ड का-
और उस मिश्रण का घातक असर, मिनटों में होता था।
सामरी नाम का वह दैत्य भभक उठा-
मैं तुम्हे इन जीवाणुओं को स्वयं ही नष्ट करने के लिए मजबूर कर दूंगा।
उसके त्रिशूल से निकली एक सर्पाकार लपट, मुझे हवा में उठाकर नचाने लगी-
नष्ट कर••• इन जीवाणुओं को दुष्ट! वरना••• मेरी ज्वाला तुम्हे••• नष्ट कर देगी।
धड़ाक
उसकी जुबान लड़खड़ाने लगी थी-
और उसकी ज्वाला भी गायब हो रही थी-
मेरा मिश्रण अपना असर दिखाने लगा था-
यही मौका था, अपने दुश्मनों को खत्म करने का-
खत्म कर दो, इन तीनों को! जल्दी!

मेरे आदमी तीनों की तरफ लपके—
लेकिन तभी- एक आकृति हिली—
आश्चर्यचकित रह गया मैं—
गजब की इच्छा-शक्ति थी सुपर कमांडो ध्रुव में—
धा ड.
मेरे वायरल मिक्सचर के असर से उसके अंग अकड़ चुके थे—
बदन बुखार से तप रहा था—
लेकिन तब भी वह मेरे आदमियों पर कहर की तरह टूट रहा था—
और उनको प्लेग के मरीजों की तरह जमीन पर गिरा रहा था—
पर क्यों ? मैं कारण नहीं समझ पा रहा था। मेरे आदमियों को हराने के बाद भी उसकी मौत निश्चित थी।
अगले ही पल मैं उसकी इस हरकत का कारण समझ गया—
वह यह देख रहा था कि वे वायरस मुझ पर या मेरे आदमियों पर असर नहीं कर रहे थे। वह इसका कारण पता करना चाहता था—
और वह कारण उसने ढूंढ ही लिया—
वह कारण था हमारी जेबों में रखी 'रेडियम' से भरी पारदर्शक शीशियां—

रेडियम से निकलती, रेडियोएक्टिव किरणें उन वायरसों को हमारे पास पहुंचने से पहले ही खत्म कर देती थीं—
गज़ब की फुर्ती से उसने सभी की जेबों से शीशियों को निकालकर जमीन पर पटक दिया—
और उनसे निकलती रेडियोएक्टिव किरणें, उन तीनों के शरीर में समाए वायरसों को तेज़ी से नष्ट करने लगीं—
मेरा मुंह खुला का खुला रह गया—
मुझे आभास भी नहीं था कि कोई इंसान मेरे वायरल मिक्सचर के हमले से बच सकता है—
लेकिन मैंने भी अपना सबसे भयंकर अस्त्र बचाकर रखा था—
मेरा 'इन्फ्रा-अल्ट्रा एनलार्जर'—
बटन दबते ही 'इन्फ्रा-अल्ट्रा किरणों ने पूरे कमरे को भर दिया—
और फिर—
पूरे कमरे में भर गए...
...मेरे बचे हुए वायरस—
वे वायरस— जो हवा में मौजूद थे, मेरी 'एनलार्जर किरणों' का स्पर्श पाते ही, आकार बदलने लगे—
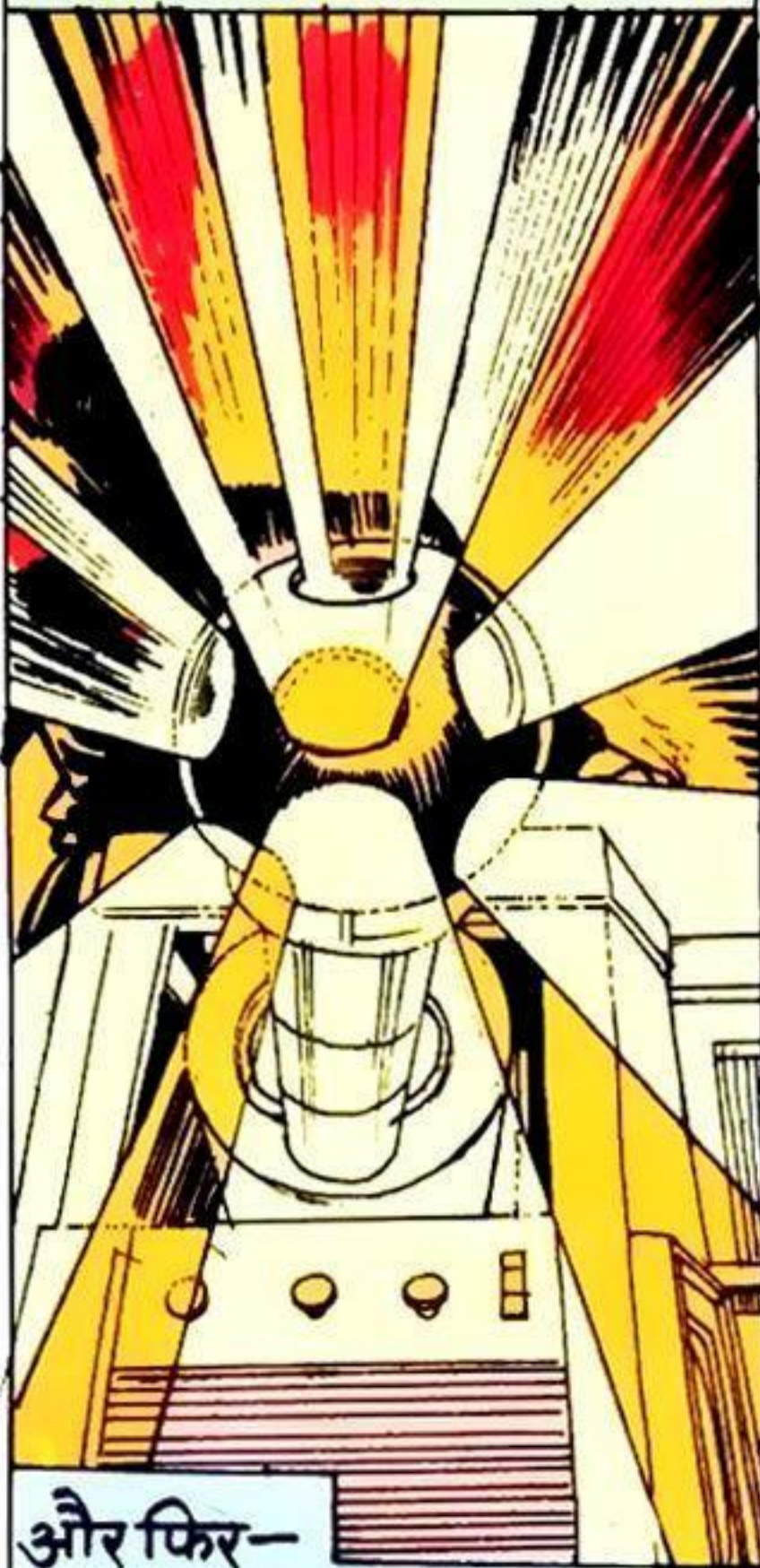
इतने बड़े आकार के वायरसों पर रेडियम की रेडियोएक्टिव किरणें बेअसर थीं—

और सामरी की ज्वाला एवं बर्फ मानव की शीत किरणें भी—

मेरा 'वायरल मिक्सचर' अजेय था—

परेशानी एक ही थी। इतने बड़े आकार के वायरसों से मैं भी नहीं बच सकता था। वरना मैं वहां पर रुककर उन तीनों की मौत का तमाशा जरूर देखता—

बाहर निकलकर, मैंने लेबोरेट्री का एकमात्र दरवाजा बन्द कर दिया। अब लैब से कोई बाहर नहीं निकल सकता था—

बाहर निकलते ही मुझको नजदीक आते पुलिस के सायरन सुनाई दिए—

शायद ध्रुव के द्वारा पकड़े गए मेरे आदमियों ने पुलिस को मेरी लैब का पता भी बता दिया था—

इसीलिए मैं वहां पर रुककर, उन तीनों की लाशें नहीं देख पाया।

पर इतना तो पक्का था कि वे मेरे वायरसों के हमले से नहीं बच सकते थे।

बचने का रास्ता था ही नहीं। बस ऐसे ही ध्रुव मारा गया, और उसके साथ-साथ सामरी और वर्गीस भी मारे गए। गेहूं के साथ-साथ घुन भी पिस गया।

हुम ! यानी आपने ध्रुव की लाश को नहीं देखा ?
अरे, लाश को देखने की क्या जरूरत थी ! उसको तो तुम उसी वक्त से लाश समझ लो !
उसके पास बचने का कोई रास्ता नहीं था !
तुम तो सर्वज्ञानी हो । तुम्हीं बताओ, वे कैसे बच सकते थे ?
मैं तो शायद आपको यह नहीं बता सकता ! लेकिन इसका जवाब...
...आपको सामरी और डॉक्टर वर्गीस उर्फ बर्फमानव दे सकते हैं ।
य... ये कैसे बच गए ? ये तो हो ही नहीं सकता ! असंभव... असंभव... ...असंभव...
सुपर कमांडो ध्रुव उस शख्सियत का नाम है, वायरस ! जो असंभव को भी संभव करने की क्षमता रखता है ।
और यह उसी का दिमाग था, जो आज हम दोनों यहां पर जिन्दा खड़े हैं ।
तुम्हारे वायरसों से बचना सचमुच असंभव था—
आह ! इनको रोकना असंभव है ।
इन पर मेरी शीत लहरों का कोई असर नहीं हो रहा है ।
तुम सच कहते हो बर्फमानव ! मेरी ज्वाला भी इन पर बे-असर है ...
...और ये हमारे शरीर को ढकते ही जा रहे हैं ।
हमारी सारी उम्मीदें साथ छोड़ रही थीं—
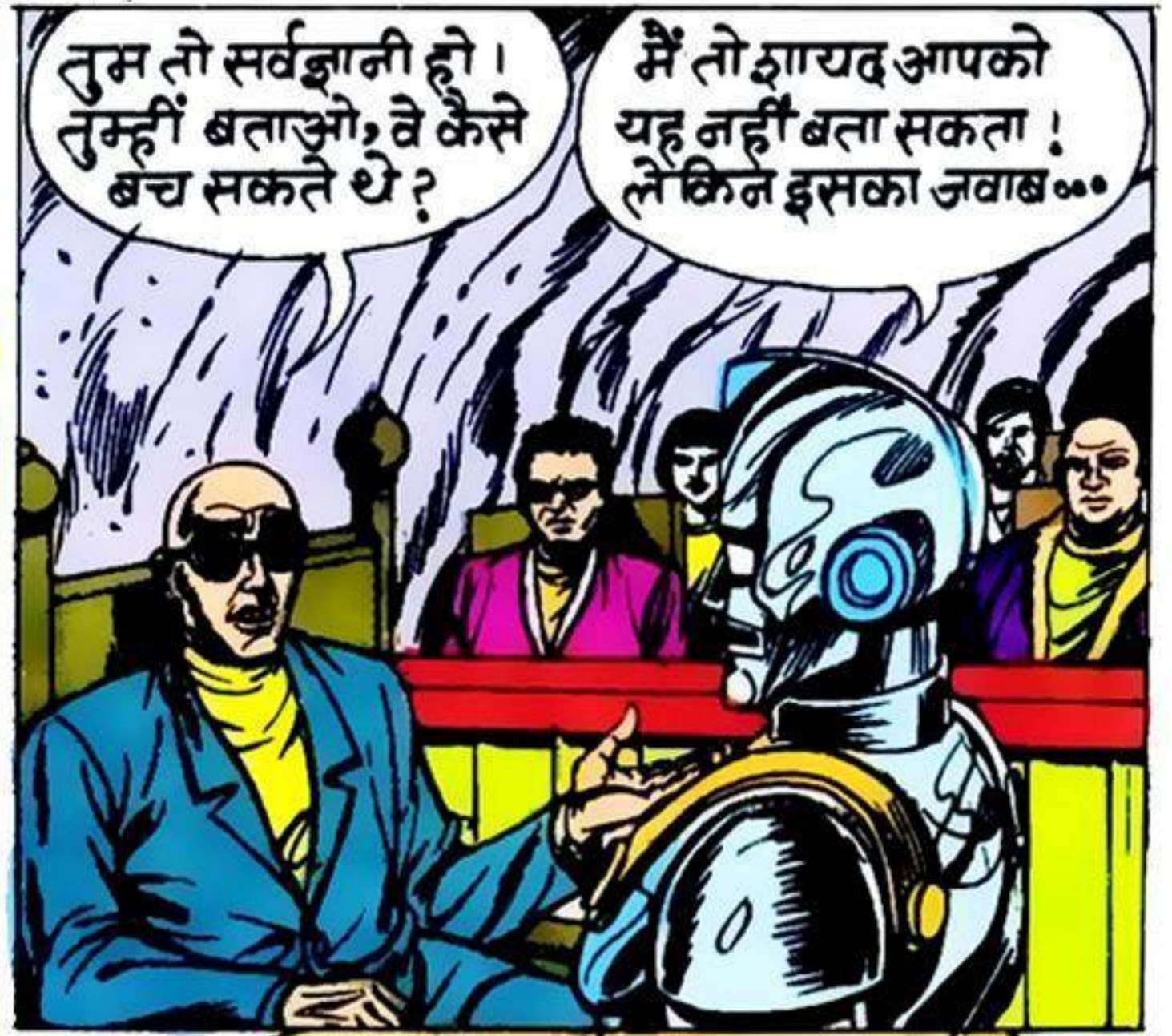
लेकिन उस परिस्थिति में भी ध्रुव का दिमाग सजग था—
एक रास्ता है! सिर्फ एक रास्ता!
लेकिन उसके लिए तुम दोनों को अपनी-अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करना पड़ेगा।
हम 'पास्चुराईजेशन' से इन जीवाणुओं को खत्म कर सकते हैं!
पास्चुर? यह क्या होता है?
ध्रुव ठीक कह रहा है, सामरी।
'पास्चुराईजेशन' जीवाणुओं को नष्ट करने की एक प्रक्रिया होती है। इसमें जिस वस्तु से जीवाणुओं को नष्ट करना होता है, उसे पहले सौ डिग्री सेन्टीग्रेट तक गर्म करते हैं और फिर एकाएक चार डिग्री सेन्टीग्रेट पर ठंडा कर देते हैं।
इससे सारे जीवाणु मर जाते हैं। पैकेट में आने वाले दूध को इसी प्रक्रिया से जीवाणुरहित किया जाता है।
वाह! मैं ज्वाला से इस कक्ष का तापमान बढ़ा देता हूं...
...उस दौरान मेरी ज्वाला ही उस तापमान से तुम लोगों की रक्षा करेगी।
और फिर तुम कक्ष का तापमान एकाएक गिरा देना।
हमने वैसा ही किया। और सामने नतीजा भी वही आया, जो हमने सोचा हुआ था।
सारे वायरस देखते ही देखते खत्म हो गए।
हमारे बाहर आने तक डॉक्टर वायरस भाग चुका था। उसके बाद हम वापस अपने रास्ते चले गए।
ध्रुव का उसके बाद क्या हुआ, यह हमको नहीं पता।
पर इतना स्पष्ट है कि सुपर कमांडो ध्रुव को डॉक्टर वायरस ने नहीं मारा।
यह स्पष्ट है! अब मैं इन दोनों के मस्तिष्क से, यहां का घटनाक्रम साफ करके इनको वापस भेज देता हूं।
डॉक्टर वायरस! तुम अग्निद्वार के पार जाकर इंतजार करो। तब तक मैं अगली गवाही सुनूंगा।
बायोट्रॉन! अगले महाखलनायक की गवाही के लिए उपस्थित करो।

महाखलनायक चुंबक सम्राट चुंबा, कृपया गवाही देने पधारें।
और क्राइमकोर्ट में एक अनोखी बात हो गई—
न... नहीं! मुझे गवाही नहीं देनी। मुझे माफ कर दो! मुझे जाने दो।
क्या हुआ, चुंबक सम्राट चुंबा?
मैंने ध्रुव को नहीं मारा, कंकालतंत्र जी!
मैं तो यूं ही यहां पर किस्मत आजमाने चला आया था।
मैं झूठी गवाही देने आया था।
पर आपका रोबोट बायोट्रॉन तो कोई भी गलती तुरन्त पकड़ लेता है।
गलती न हो तो गवाहों को चुटकियों में यहां परबुला लेता है...
... मैं गलती मानता हूं। कान पकड़ता हूं। मुझे जाने दो।
उफ! यह महाखलनायक होकर ऐसी बचकानी हरकतें क्यों कर रहा है बायोट्रॉन!
यह घबरा गया है स्वामी! आतंकित हो गया है।
इससे भी मैं बाद में निपटूंगा!
फिलहाल इसको मैं अपने व्यक्तिगत कारागृह में भेज देता हूं।
तुम अगले गवाह को बुलाओ, बायोट्रॉन!
महाखलनायक श्रीमान राक्षस चंडकाल...
... कृपया गवाही देने पधारें!
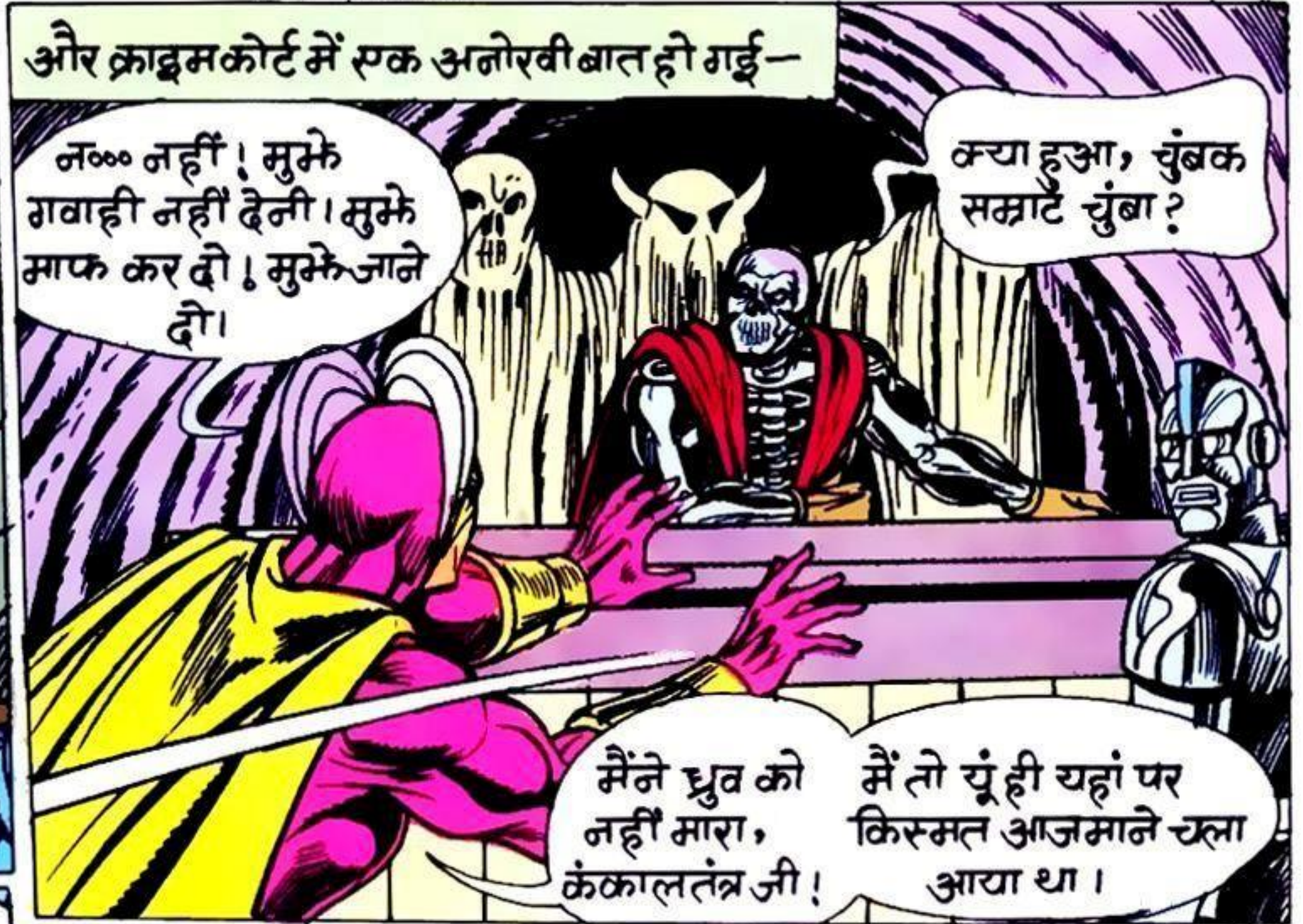
पांचवीं गवाही— मैंने मारा ध्रुव को

क्योंकि मेरी गवाही के बाद किसी की गवाही सुनने की जरूरत नहीं पड़ती।

जो हो गया, उसे तो बदला नहीं जा सकता श्रीमान चंडकाल! अब आप हमारी गलती सुधार दीजिए।

मैं... यानी मेरा शरीर स्वर्ण नगरी में कैद था। लेकिन मुझे कैद में रख पाना असंभव था।

मैं आखिरकार वहां से भाग निकला—

वैसे मैंने अपनी सैकड़ों साल की जिन्दगी में सिर्फ दो बार शिकस्त खाई है...

तीनों बार यह सिर्फ एक ही शख्स के कारण हुआ था...

★ पढ़ें: 'किरीगी का कहर', 'सामरी की ज्वाला' एवं 'चंडकाल की वापसी'—

कहीं पर कुछ कमी जरूर थी।

वर्ना राक्षस जाति के आखिरी वंशज को मात देना खेल नहीं था।

राक्षसों के राज्य को पूरी दुनिया पर फैलाने का मेरा सपना अब तक अधूरा था—

अब एक ही रास्ता शेष था।

राक्षस-गुरू 'धन्नारक्ष' की शरण में जाने का—
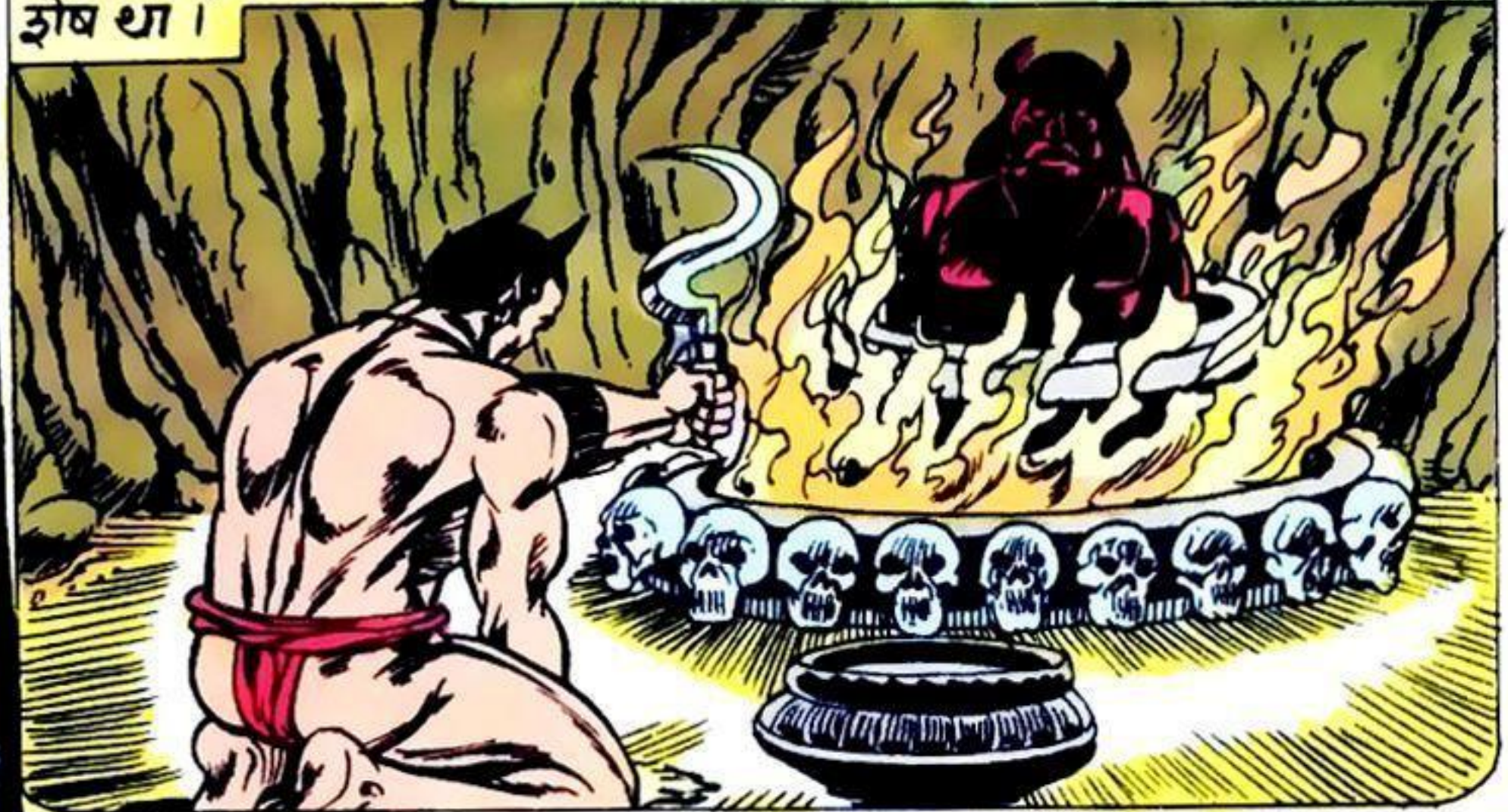
हे धन्नारक्ष! अगर इसी पल आपके दर्शन नहीं हुए, तो पृथ्वी पर मौजूद आखिरी राक्षस चंडकाल का शीश आपके चरणों में लोटता नजर आएगा।

मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल था।

इस तरह मात खा-खाकर जीने का कोई मतलब नहीं था।

मेरी गर्दन पर फरसा धंसने लगा। लहू की धार नीचे टपकने लगी—

लेकिन राक्षस-गुरू धन्नारक्ष को मेरी मौत मंजूर नहीं थी—

बोलो चंडकाल! तुमको हमारी आवश्यकता क्यों आ पड़ी?
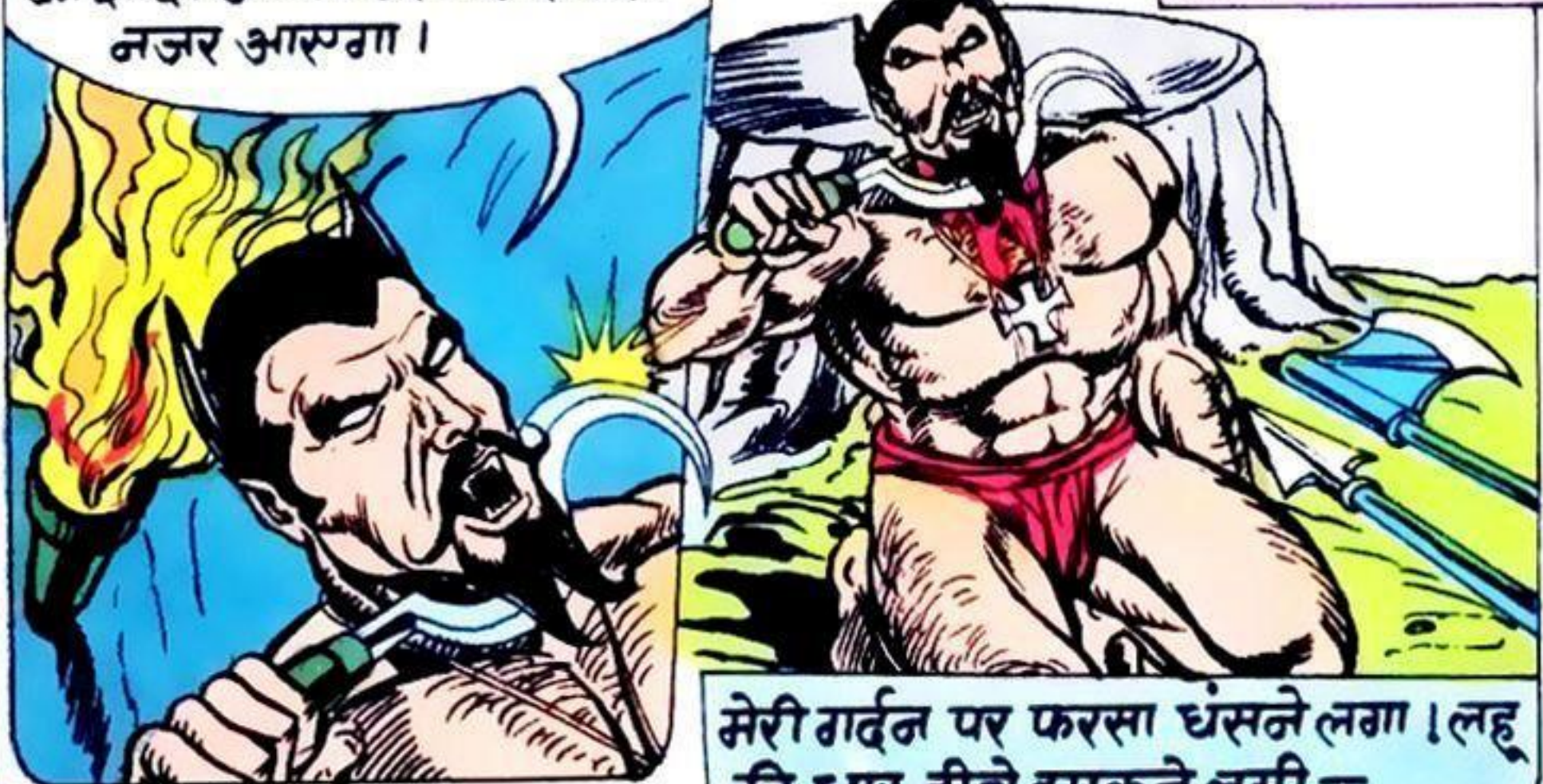
राक्षस-गुरू धन्नारक्ष की जय हो।

मैं राक्षस-गुरू को अपनी समस्या बताता चला गया—

तुम्हारी बार-बार हार का कारण सिर्फ एक है पुत्र चंडकाल।

ध्रुव के अंतर में मौजूद सत्य एवं न्याय! जब तक ये शक्तियां उसके साथ हैं, तुम्हारी दुष्टशक्तियां उस पर विजय नहीं पा सकतीं।

और बगैर उसको रास्ते से हटाए, तुम पृथ्वी पर राक्षस-राज फिर कभी कायम नहीं कर सकते!

ब्रह्माण्ड के दूसरे कई ग्रहों पर राक्षस-राज सिर्फ इसलिए कायम है, क्योंकि वहां पर सत्य और न्याय नहीं है।

मुझे ध्रुव पर विजय पाने का रास्ता बताइए, गुरुदेव!

ध्रुव पर विजय पाने के लिए तुमको अपने अंदर कुछ सत्य और न्याय की शक्तियों को सीखना होगा!

सत्य और न्याय! वह भी मेरे अन्दर?

सोचकर ही उल्टी आती है, गुरुदेव!

कोई और रास्ता नहीं है?

नहीं वत्स! यह काम तुमको करना ही होगा! तभी तुम ध्रुव के बराबर हो पाओगे।

ये सत्य और न्याय की शक्तियां मैं सीखूंगा कैसे?

इस पृथ्वी पर कुछ ऐसे सत्यनिष्ठ प्राणी हैं, जिनके अन्दर अद्भुत शक्तियां हैं।...

... तुम उन अद्भुत शक्तियों को खींचोगे।

और उन शक्तियों के साथ-साथ, सत्य और न्याय की शक्तियां भी खिंच आएंगी।

वे अद्भुत शक्ति वाले प्राणी कौन हैं गुरुदेव?

कई हैं... एक तंत्र-विशेषज्ञ कन्या है...

... लोरी!

और वानरराज हनुमान के वंशज यतियों का गुरु ...
...'शक्तालू'—

ऐसे कुछ और भी हैं। मैं तुमको वह सिद्धि देता हूं, जिसमें तुम इनकी शक्तियां सीख सकोगे!

विजयी भव, पुत्र!

अब मुझे वह रास्ता मिल गया था, जो मुझे कामयाबी की मंजिल पर पहुंचा सकता था।
लेकिन इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था।
मैंने शक्तियां सोखनी शुरू कर दीं—
ओह! य... यह क्या हो रहा है। मुझे एकदम से कमजोरी क्यों महसूस हो रही है?
सत्य और न्याय की शक्तियां अपने अंदर सोखने के ख्याल से ही घिन आ रही थी मुझे—
ओह! कोई मेरी मानसिक शक्तियां खींच रहा है। और मुझे मानसिक संकेत मिल रहे हैं कि इन शक्तियों का उपयोग... ध्रुव को खत्म करने के लिए किया जाएगा।
ओफ! मैं... ध्रुव की मौत का... कारण बनूंगी।
न... नहीं... कभी नहीं!
कभी नहीं...
वह लड़की बड़बड़ाती हुई, लड़खड़ाती हुई नीचे जा गिरी—
क्योंकि उसकी शक्तियों को मैंने सोख लिया था।
गुरू धन्नारक्ष का कहना सच था।
मैं अपने आपको पहले से अधिक शक्तिशाली महसूस कर रहा था।
अब बारी थी... यतियों के गुरू शक्तालू की—
तुम शीघ्र ही यतिराज बनने वाले हो, कुमार जिंगालू!
... उसके लिए तुमको अभी से कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है।

पहला नियम... आऽऽऽह ! ओह ! य... यह क्या हो रहा है ? म... मेरी शक्तियां खिंच रही हैं। पर... पर ये कैसे संभव है ?
जिंगालू ! कोई दुष्ट... मेरी शक्तियां... खींच रहा... है !
उसको रोको... आह !
पीजालू ! अंगिरा !
गुरूदेव को संभालो !
मैं उस रहस्यमय चक्रवात का पीछा करता हूं !
गुरूदेव !
वह बंदर मेरे पास आ रहा था। लेकिन मेरी और उसकी... उसकी मुठभेड़ एक बार हो चुकी थी।
मैं उसकी शक्तियां जानता था।
और इस वक्त मेरे अन्दर जो शक्तियां दौड़ रही थीं, उसके सामने जिंगालू की शक्तियां, तिनका भी नहीं थीं—
लेकिन अभी मुझे और भी कई लोगों की शक्तियां सोखनी थीं—
और उसके बाद—

...मुझे निपटना था- ध्रुव से!
और इस बार वह मुझसे जीत नहीं सकता था।
क्योंकि अब मेरे पास दुनिया को तबाह कर सकने वाली शक्तियां थीं-
बोलो नताशा, क्या लोगी?
लिखिए एक मलाई कोफ्ता...
और एक...
ओ माई गॉड!
ध्रुव देखो!
अरे! यह आदमी तो एकाएक राक्षस बन गया।
मैंने एक किरण को इससे आकर टकराते देखा था।
बचो, ध्रुव!
बचने का सवाल ही कहां था।
मैंने उस आदमी को राक्षस बनाने के साथ-साथ...
...उसमें अमानवीय शक्ति भी भरी थी-
धाड़
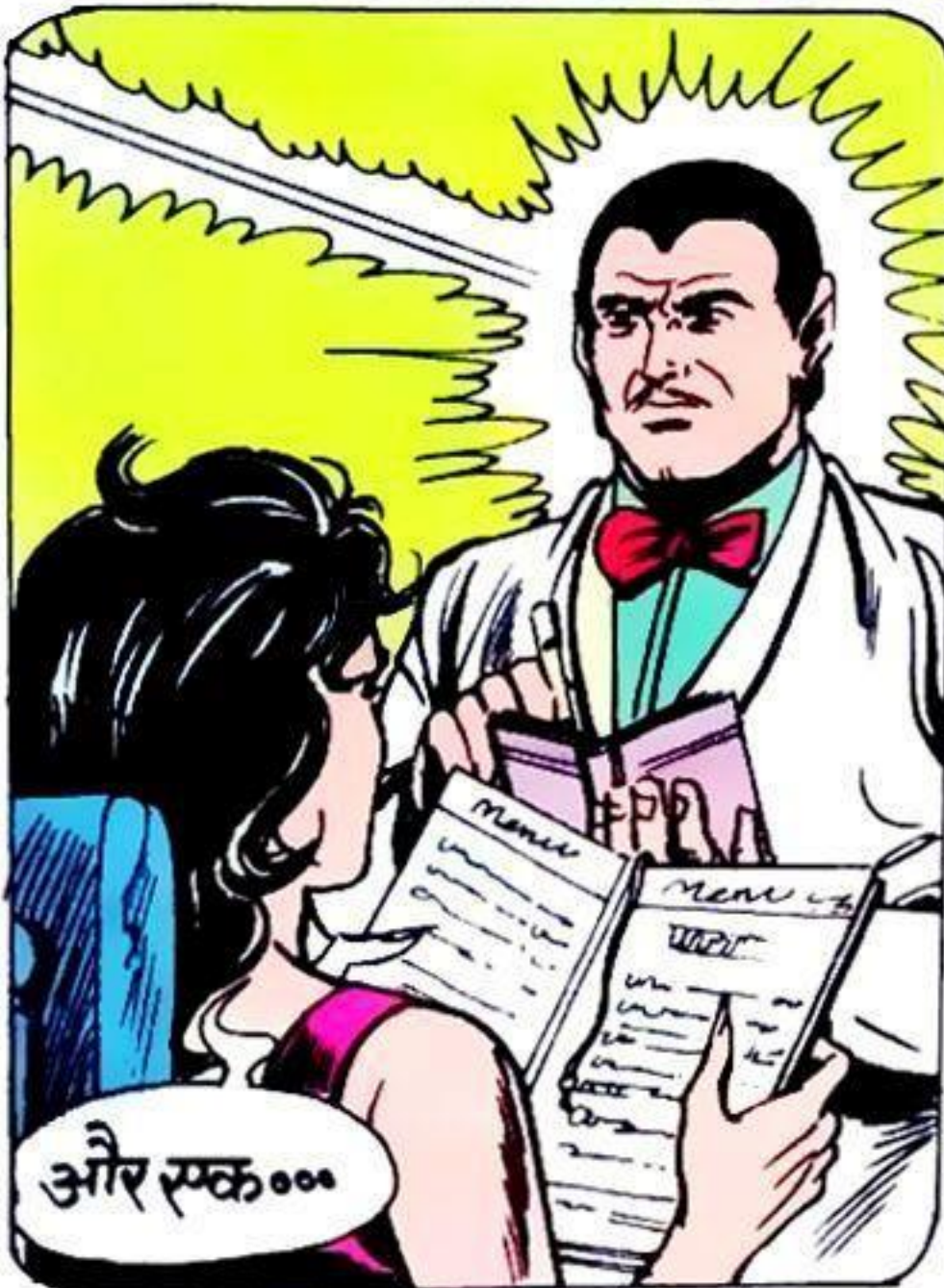
उफ! मेरे वारों का इस पर कोई असर नहीं हो रहा है।

ध्रुव ठीक कह रहा था! एक राक्षस पर, एक मानव के वारों का क्या असर होना था।

वह ध्रुव को उसी पल खत्म कर डालता...

...अगर वह लड़की नताशा उसकी मदद को न आ गई होती।

वह लड़की भी जरूर एक अनुभवी योद्धा रही होगी—

क्योंकि एक सधे हुए वार से, 'टेबुल-नाइफ' राक्षस के दिल में जा धंसा—

लेकिन—

हा हा हा हा हा!

अरे! दिल में चाकू खाकर भी यह जिन्दा है।

ध्रुव! यह प्राणी खतरनाक है। इसको रोकने का नहीं, खत्म करने का रास्ता सोचो।

यह एक आदमी है नताशा!

अगर किसी ने इसको चमत्कारी तरीके से दैत्य के रूप में बदल दिया है, तो इसमें इसका क्या कुसूर है?

ध्रुव का तर्क अपनी जगह पर सही था—

और नताशा का तर्क अपनी जगह पर...

कई बार बेकुसूर ही मरना पड़ता है ध्रुव!

इस रूप में यह किसी की हत्या भी कर सकता है।

और उस हत्या के जिम्मेदार हम होंगे।

ओफ्! बताओ मैं क्या करूं? मैं इसकी जान नहीं ले सकता।
तुम सिर्फ इसको किचन की तरफ धकेलने की कोशिश करो। बाकी मैं संभाल लूंगी।
ध्रुव, मेरी किरण द्वारा बनाए गए दैत्य से उलझ गया—
और वह लड़की, किचन की तरफ भागी—
उस लड़की पर, फिर मैंने ध्यान नहीं दिया—
मुझे ध्रुव की मौत का नजारा जो देखना था।
लेकिन ऐसे जुझारू इंसान के पास तो मौत भी धीरे-धीरे आती है।
डर-डर कर।
जिस बला को देखकर अधिकतर मानवों का दिल धड़कना बन्द कर दे...
...जिस दैत्य में अमानवीय शक्ति हो...
...जिसको हराना असंभव हो...
...जिसके दिल में चाकू धंस चुका हो, फिर भी वह जिन्दा खड़ा हो...
...ऐसी बला के साथ उलझा हुआ था वह जांबाज ध्रुव—
पलभर के लिए मेरे दिल में यह ख्याल आया कि काश, ऐसा योद्धा राक्षस जाति में पैदा हुआ होता, तो राक्षस बगैर किसी प्रयास के पूरी पृथ्वी पर कब्जा कर लेते—

पलभर के लिए मैं अपने जानी-दुश्मन की तारीफ कर उठा—
लेकिन फिर जैसे मैं नींद से जागा। ध्रुव दैत्य को, किचन के दरवाज़े तक ले आया था।
ध्रुव! इसको किचन के अंदर ढकेलो!
जल्दी... जल्दी करो!
ध्रुव थक चुका था।
लेकिन फिर भी उसके वार में इतनी ताकत थी...
...कि वह, उस दैत्य को उछालकर किचन के अंदर फेंक दे...
...उसी पल- नताशा ने, माचिस की एक तीली को जलाया—
उससे पूरी माचिस में आग लगाई...
...और उसको किचन के अंदर फेंक दिया—
किचन
रोशनी के झमाके से मेरी आंखें तक चुंधियां गईं...
...मैं पलभर में समझ गया कि क्या हुआ होगा?
नताशा ने किचन के सारे गैस सिलेंडरों को खोल दिया होगा...
...और उस गैस ने आग पकड़ते ही, किचन को, नर्क का छोटा रूप बना दिया होगा—
दैत्य को राख में बदलते, एक मिनट भी नहीं लगा होगा—

हम जीत गए, ध्रुव!
यह जीत नहीं, हार है, नताशा! हमको एक आदमी की जान लेनी पड़ी।
वह जान तुमने नहीं, मैंने ली, ध्रुव! और वह जरूरी भी...
ध्रुव! वह देखो!
अरे! अरे! लावा! जमीन से लावे की फुहार सी निकल रही है।
कड़ाऽऽऽम
कैसे?
यह जरूर किसी शैतान का काम है।
उसी का, जिसने वेटर को दैत्य बना दिया था! आओ देखते हैं।
बाकी लोग, लावे की उस फुहार से दूर भाग रहे थे।
लेकिन वे दोनों उस लावे की तरफ लपक रहे थे।
ध्रुव! देखो! लावे के बीच में कोई खड़ा हुआ है।
चंडकाल!

हां, चंडकाल! यानी तेरा काल सुपर कमांडो ध्रुव!
अब मैं समझा। यह सब शैतानी लीला तुम्हारी थी!
यह तो शुरूआत थी, बच्चे!
अब तू चंडकाल की नई शक्तियों का एक से बढ़कर एक नमूना देखता जा!
कमाल की इच्छा-शक्ति थी ध्रुव में-
मुझे तो मेरे 'मायावी-कवच' ने लावे की गर्मी से बचाया हुआ था-
वह लावे की भीषण गर्मी को कैसे बर्दाश्त कर पा रहा था, यह मेरी समझ के बाहर की बात थी-
वह किसी भी पल मेरी तरफ लपक सकता था ...
... और अपनी भीषण-शक्तियों के बावजूद भी, मैं कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता था-
मुझे अपनी चाल को बदलना पड़ा-
मेरे एक इशारे पर...
उसके चारों तरफ लावे के फव्वारे उबलने लगे-
पर उसमें गजब की फुर्ती थी।
एक भी शोला उसे छू नहीं पाया-
... आग के शोले भीषण रूप धर कर नाच उठे-
ध्रुव की 'इहलीला' समाप्त होने का वक्त आ गया था-

लेकिन तभी—
खुद मेरा बदन हवा में उड़ता हुआ लावे के उबलते सोते में जा गिरा—
वह लड़की नताशा, ध्रुव की जान खतरे में देखकर अपनी जान को भी दांव पर लगाकर चली आई थी—
पलभर के लिए तो मेरा दिमाग भी चकरा गया ! और दिमाग के चकराते ही, मेरे मायावी कवच की पर्त भी पतली होने लगी—
अगर मैंने तुरन्त ही संभलकर अपने कवच की पर्त को मोटा न कर दिया होता तो मेरा शरीर भी उसी लावे का हिस्सा बनकर रह जाता।
पलभर के लिए वे दोनों खुश हो गए होंगे।
ध्रुव ! तुम ठीक तो हो न ?
ह... हां ! सिर्फ बदन में थोड़ी सी जलन महसूस हो रही है !
तुम्हारा दुश्मन चंडकाल खत्म हो गया है, ध्रुव...
...उसके खत्म होते ही लावे का झरना भी खत्म हो रहा...
ओह !
नताशा !
उस कमजोर हालत में भी ध्रुव की छठी इंद्रिय, एकदम सही काम कर रही थी—
मुझे मारने का अरमान अपने दिल में लिए-लिए...
... अब तुम दोनों एक साथ ही मरोगे !
लावे के उस भीषण शैतान से बच सकना असंभव था—

लेकिन वह उन दोनों तक पहुंचने से पहले ही, हवा में घूम गया था –
और एक अद्भुत 'तांत्रिक-यंत्र' में समा गया...
...जिसको पकड़े हुए थी...
...लोरी! तुम यहां पर कैसे?
बाद में बताऊंगी! वह तो खैर हुई कि राजनगर की फ्लाइट मुझे तुरन्त ही मिल गई!
मुझे आभास हो रहा है कि मेरी मानसिक शक्तियां इसी दुष्ट ने चुराई हैं...
... पर मानसिक शक्तियां न होने के बावजूद भी मैं इस दुष्ट के मंत्रों को काटने वाले 'तांत्रिक-यंत्र' बना सकती हूं।
जैसे कि यह प्रिज्म पिरामिड।
इसके अंदर रखा मंत्रित रुद्राक्ष तेरे हर वार को निष्फल कर देगा!
तू मेरा वार रोक सकती है लड़की तो अब मैं वार नहीं करूंगा!
...वार करेगा... मेरा गुलाम। मेरी महान शक्तियों अपनी चरम सीमा पर पहुंचो।
वह लड़की, लोरी ठीक कह रही थी। उस मंत्रित रुद्राक्ष में सचमुच मेरे वारों को काट सकने की क्षमता थी।
पर मैं ऐसी स्थिति के लिए तैयार था।
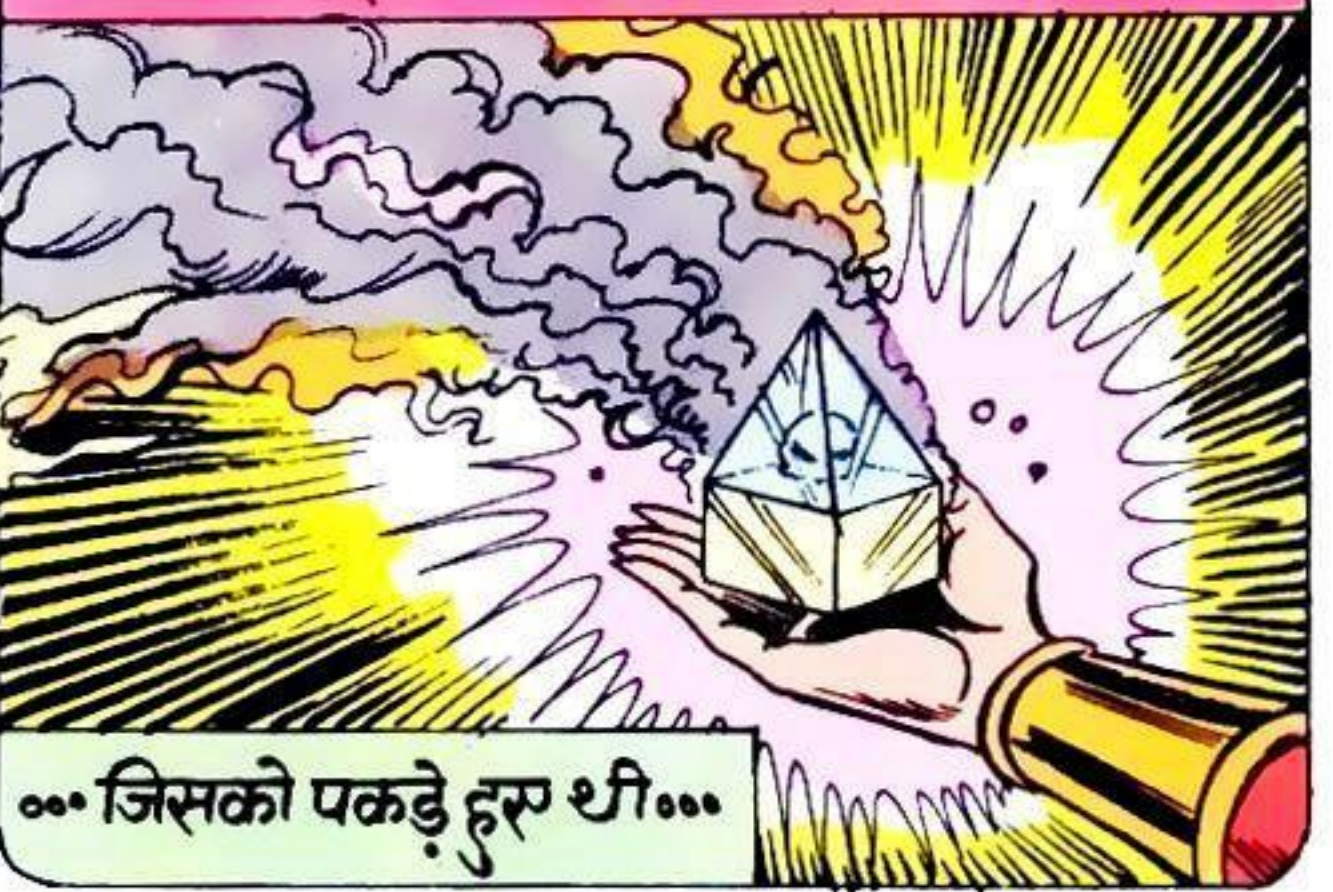
पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि! मेरा हुक्म मानो! पांचों तत्त्व आपस में मिलो!
महाप्रेत की रचना करो!
पलक झपकते ही पांचों तत्त्व आपस में मिल गए।
और पांच तत्त्व से बनी एक भयावह आकृति खड़ी हो गई—
???
अब मैं इसमें अपनी दुष्टता के साथ-साथ सत्य और न्याय का भी अंश डालता हूं। मैं फूंकता हूं इसमें प्राण!
इसके अन्दर भी वही शक्तियां हैं, जो तुम लोगों के अंदर हैं। सत्य और न्याय की! इस पर अपना वार चला सकती है तो चला लड़की!
नहीं तो ये तुम पर वार करेगा।
ओफ! ध्रुव, इस पर मेरा तंत्र ज्ञान बेकार है।
इसको अगर कोई रोक सकता है तो सिर्फ तुम...

लेकिन कैसे, लोरी ? मेरे वार तो इसको पता ही नहीं चल रहे हैं।
वार पता कैसे चलते ? महाप्रेत का पूरा शरीर वज्र से भी ज्यादा कठोर था। और उसमें अमानवीय शक्ति थी—
धड़ड़म
यह तो उन तीनों की फुर्ती थी, वे उस वार से बच गए—
वरना कार उन तीनों को अपने नीचे पीस डालती-
भागो, ध्रुव ! तुम भाग क्यों नहीं रहे हो ?
न जाने क्यों, मौत को अपनी तरफ बढ़ते देखकर भी ध्रुव भाग नहीं रहा था। वह उसका इन्तजार कर रहा था।
LUX
महाप्रेत, कार के मलबे तक आ चुका था—
तब मुझे समझ में आया कि ध्रुव भाग क्यों नहीं रहा था—
उसकी एक ठोकर से, लावे का दहकता शोला, कार से बहकर निकलते पेट्रोल में जा गिरा—
और एक जबरदस्त धमाका हुआ—
धड़ााााम
आसपास की इमारतों के शीशे तक चटक गए—

लेकिन-
ओह! इसके बदन पर तो खरोंच तक नहीं आई, ध्रुव!
अब क्या होगा?
महाप्रेत के हाथ उन तीनों की तरफ बढ़े-
वह उनको मुट्ठी में दबाकर पीस ही डालता-
अगर एक और अड़चन, रास्ते में न आ गई होती तो...
ओह! तो तू यहां तक आ ही पहुंचा, बन्दर! मेरा चक्रवात तुझे भटका नहीं पाया।
जिंगालू! यह सब क्या हो रहा है? पहले लोरी और फिर तुम?
तुम लोग यहां तक कैसे आ गए?
धाड़
तो वह चक्रवात तेरा भेजा हुआ था, दुष्ट! यानी तूने ही गुरू शक्तालू की शक्तियां चुराई हैं।
तेरे चक्रवात ने मुझे भटका दिया था।
इसलिए मैं यहां पर, ध्रुव से सलाह लेने आया था!

लेकिन यहां पर मेरी सारी मुश्किलें एक साथ आसान हो गईं।
ला! मेरे गुरू की शक्तियां वापस कर।
बन्दर का वार भीषण था—
और मेरी शक्तियां, महाप्रेत का निर्माण करने से क्षीण हो गई थीं—
वे चारों मिलकर मुझे मार ही डालते•••
••• अगर महाप्रेत, फिर उठ खड़ा न होता—
दो भीमकाय पहाड़ आपस में टकरा रहे थे—
इस बार महाप्रेत असावधान नहीं था—
और जिंगालू ने उस पर वार करके, अपने आपको उसका दुश्मन साबित कर दिया था—
हर वार के साथ चिंगारियां हवा में उड़ रही थीं—
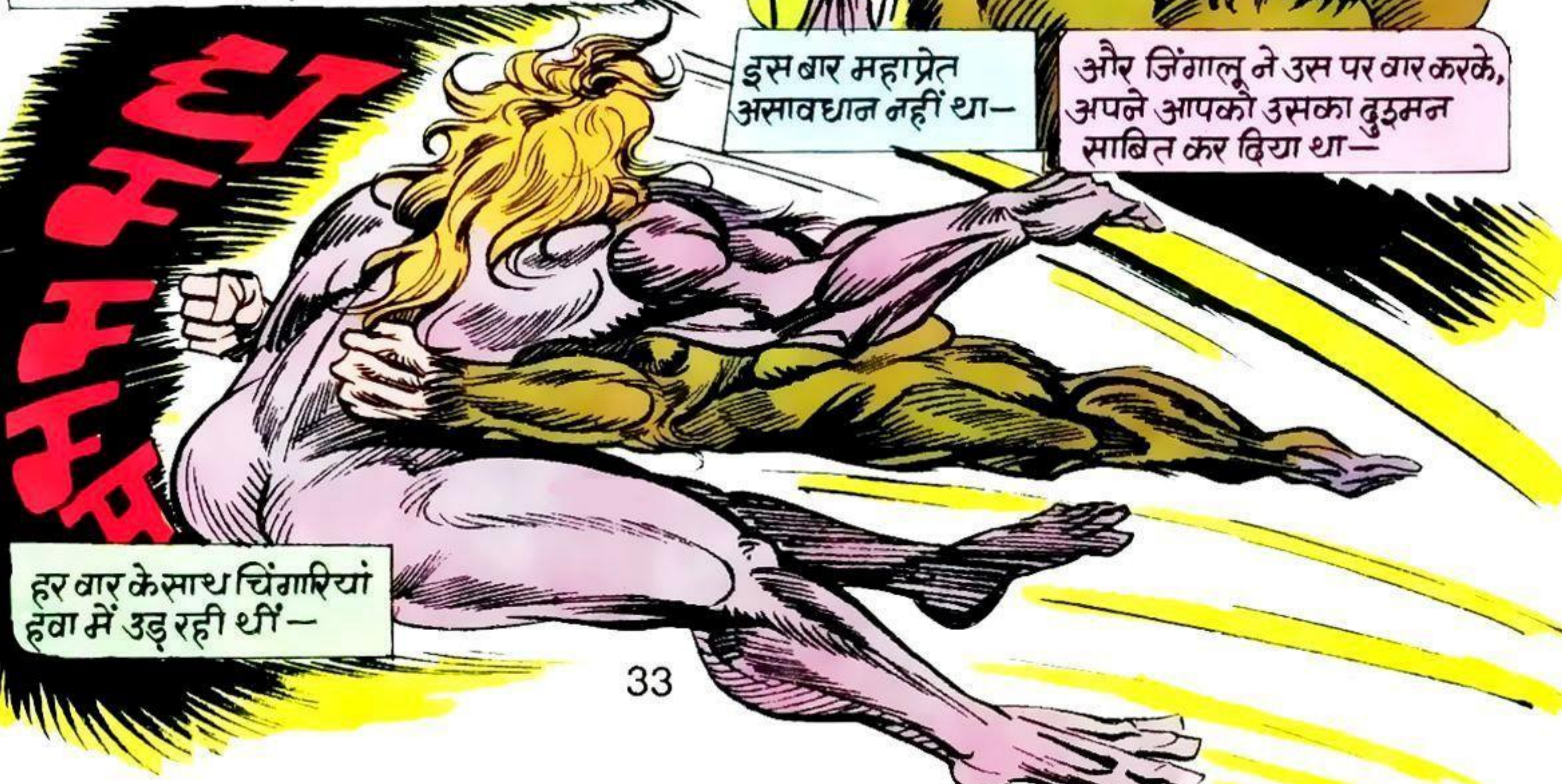
लेकिन महाप्रेत में न चोट का अहसास था, न दर्द का—
लेकिन ये दोनों अहसास, जिंगालू में मोजूद थे।
... इस पर मेरे किसी वार का... असर... नहीं... हो रहा।
जिंगालू महाप्रेत के सामने टिक नहीं सका—
लेकिन महाप्रेत भी जिंगालू की जान नहीं ले सका—
आह! इसको हरा पाना... असंभव है, ध्रुव!
ध्रुव ने एक बार फिर अपनी जान खतरे में डाल दी थी—
भागो, ध्रुव! जिससे जिंगालू नहीं जीत पाया उससे हम क्या जीतेंगे!
भागना समस्या का हल नहीं है नताशा!
अब महाप्रेत का ध्यान फिर से अपने मुख्य दुश्मन की तरफ खिंच गया था—
अचानक ध्रुव की आंखें चमक उठीं—
हर मजबूत चीज में एक न एक कमजोर दरार होती है। इसमें भी होगी।
जब मैंने इसके माथे पर पत्थर फेंका था, तो इसने उसको हाथ उठाकर बचाया था...
... जबकि बाकी वारों पर इसने ध्यान तक नहीं दिया था।
समझ गया! इसके माथे पर चमकता गोला...
... यही इसका कमजोर स्थान है।
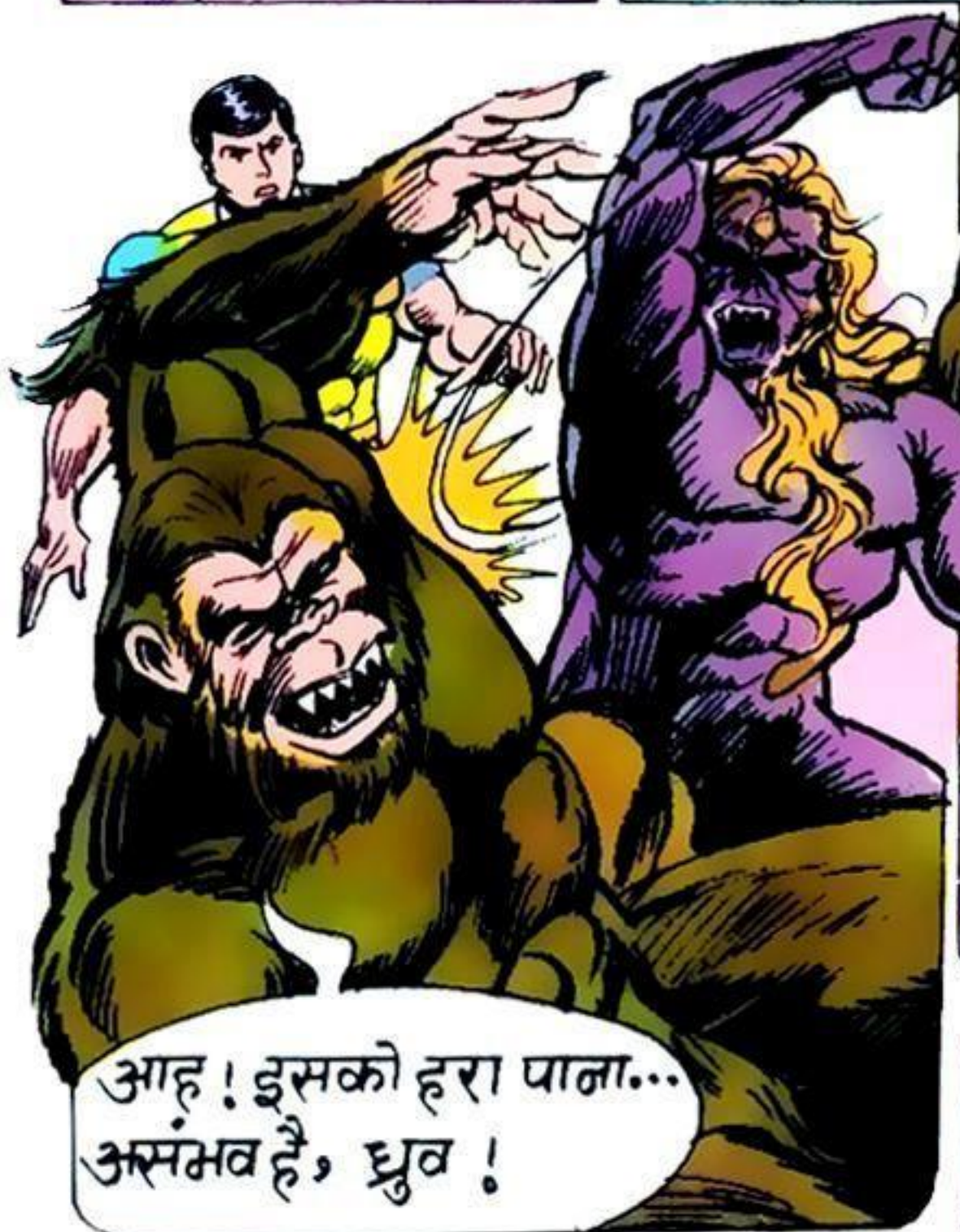
... मुझे उस गोले तक पहुंचकर उस पर वार करना होगा! यही एकमात्र रास्ता है।
मैं समझ गई ध्रुव! यह पंचतत्व से मिलकर बना प्राणी है। और वह प्रकाशपुंज उन पांचों तत्वों का संधिकेन्द्र है।
उस पर सीधा वार करने से, पांचों तत्वों के बीच का बंधन टूट कर बिखर जाएगा।
और ये प्राणी समाप्त हो जाएगा।
जैसा कि मैं पहले भी स्वीकार कर चुका हूं, वह लड़की लोरी महान तंत्र ज्ञाता थी। उसने बिलकुल सही निष्कर्ष निकाला था।
लेकिन उस प्रकाशपुंज पर वार करने का नतीजा वह नहीं जानती थी।...
...और न ही ध्रुव—
इतनी चपलता, इतनी फुर्ती और इतना अदम्य साहस, मैंने अपनी सैकड़ों वर्षों की जिन्दगी में कभी नहीं देखा—
ध्रुव का शरीर कभी लहराता, कभी उछलता और कभी झूलता हुआ महाप्रेत के मस्तक की तरफ बढ़ रहा था—
महाप्रेत की, उसको रोक पाने की हरकोशिश नाकाम हो रही थी—

ध्रुव उसकी पकड़ में आ नहीं पा रहा था —
अब ध्रुव का निशाना उसकी पहुंच के अन्दर आ चुका था —
पलभर के लिए ध्रुव भी ठिठक गया —
शायद वह उस 'प्रकाशपुंज' पर वार करने का परिणाम सोच रहा था —
लेकिन फिर - उसका बदन हवा में लहरा गया —
धड़.
जूते का 'प्रकाशपुंज' पर एक तेज प्रहार हुआ —
और एक बहुत तेज बेआवाज चमक उभरी —
जैसे पलभर के लिए, रात में सूर्य निकल आया हो —
लोरी का सोचना सही था। संधिकेन्द्र पर प्रहार करने से बंधन टूट गया था। महाप्रेत के पांचों तत्त्व अलग-अलग हो गए थे —
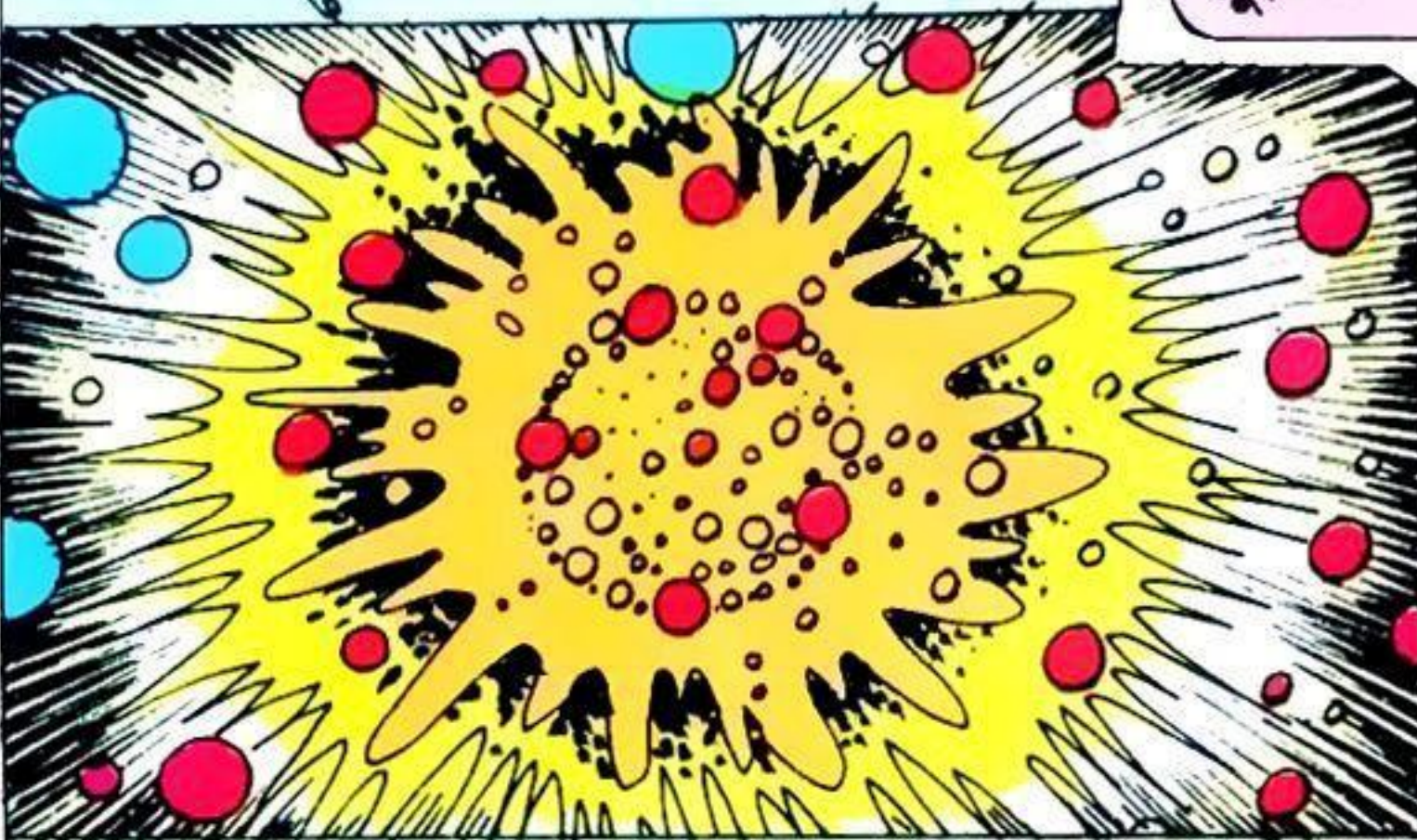
लेकिन उसके साथ-साथ चार और शरीरों के भी पांचों तत्त्व अलग-अलग हो गए थे।

जिंगालू के, लोरी के, और नताशा के...

...और सुपर कमांडो ध्रुव के!

सुपर कमांडो ध्रुव मर चुका था!

रोंगटे खड़े कर देने वाली कहानी थी—

अदालत में मौजूद सभी व्यक्ति भय से सिहर उठे थे—

सिवाय कंकालतंत्र और मशीनी रोबोट बायोट्रॉन के—

आप महान खलनायक हैं, श्रीमान चंडकाल! हम आपकी शौर्य गाथा से सहमत हैं।

अड़चन सिर्फ एक ही है। ध्रुव के अलावा आपने जिन तीन अन्य प्राणियों को विखंडित किया...

...वे अभी तक जीवित हैं। स्वामी कंकालतंत्र! जरा उनको यहां पर बुलाइए!

य... यह कैसे हो सकता है? यह... असंभव है!
ये तीनों यहां पर गवाह की हैसियत से आए हैं।
और इस वक्त ये स्वामी कंकालतंत्र के सम्मोहन में हैं।
इनको यहां आने के बारे में कुछ भी याद नहीं रहेगा।
लेकिन इस महासम्मोहन की अवस्था में, ये सिर्फ सच बयान करेंगे।
श्रीमान जिंगालू! आपके मस्तिष्क में स्वामी कंकालतंत्र ने, श्रीमान चंडकाल का पूरा बयान भर दिया है।
अब इस घटना को कृपया विस्तार से सुनाएं।
चंडकाल का कहना सच है। हम सबके शरीर महाप्रेत के साथ, विखंडित हो गए थे।
पर महाप्रेत के विखंडित होने से गुरु शक्तालु की शक्तियां भी आजाद हो गई थीं।
वे शक्तियां उनके पास पहुंचते ही वे सारा वृत्तांत जान गए। और चूंकि हमारा विखंडन, प्राकृतिक नहीं था, इसलिए अपनी शक्तियों के द्वारा वे हम चारों के शरीरों को वापस जोड़ने में सफल हो गए।
वहां से विदा होने के बाद मैं ध्रुव से नहीं मिला। उसके बाद ध्रुव का क्या हुआ, हम नहीं जानते!
धन्यवाद श्रीमान जिंगालू!
अब आप इनको वापस भेज सकते हैं, श्रीमान कंकालतंत्र।

कंकालतंत्र ने अपनी शक्तियों के द्वारा नताशा, जिंगालू और लोरी को वापस भेज दिया—
आपका बयान सही भी था, श्रीमान चंडकाल, और गलत भी!
आपने सुपर कमांडो ध्रुव को मारा भी, और नहीं भी मारा!
भाग्य ने आपके साथ अन्याय किया! परन्तु हमारे दिल में आपके लिए एक विशेष सम्मान पैदा हो गया है!
आप हमारी विशेष आरामगाह में विश्राम करें। बाकी गवाहियां सुनने के बाद, हम आपसे कई बातें करेंगे।
अवश्य, कंकालतंत्र! अगर हम तुम साथ मिल जाएं तो ब्रह्माण्ड हमारे कदम चूमेगा!
चंडकाल के जाने के बाद—
बायोट्रॉन! अगले 'खलनायक' को शीघ्र बुलाओ!
महाखलनायक 'ग्रैंड मास्टर रोबो' कृपया गवाही देने पधारें।
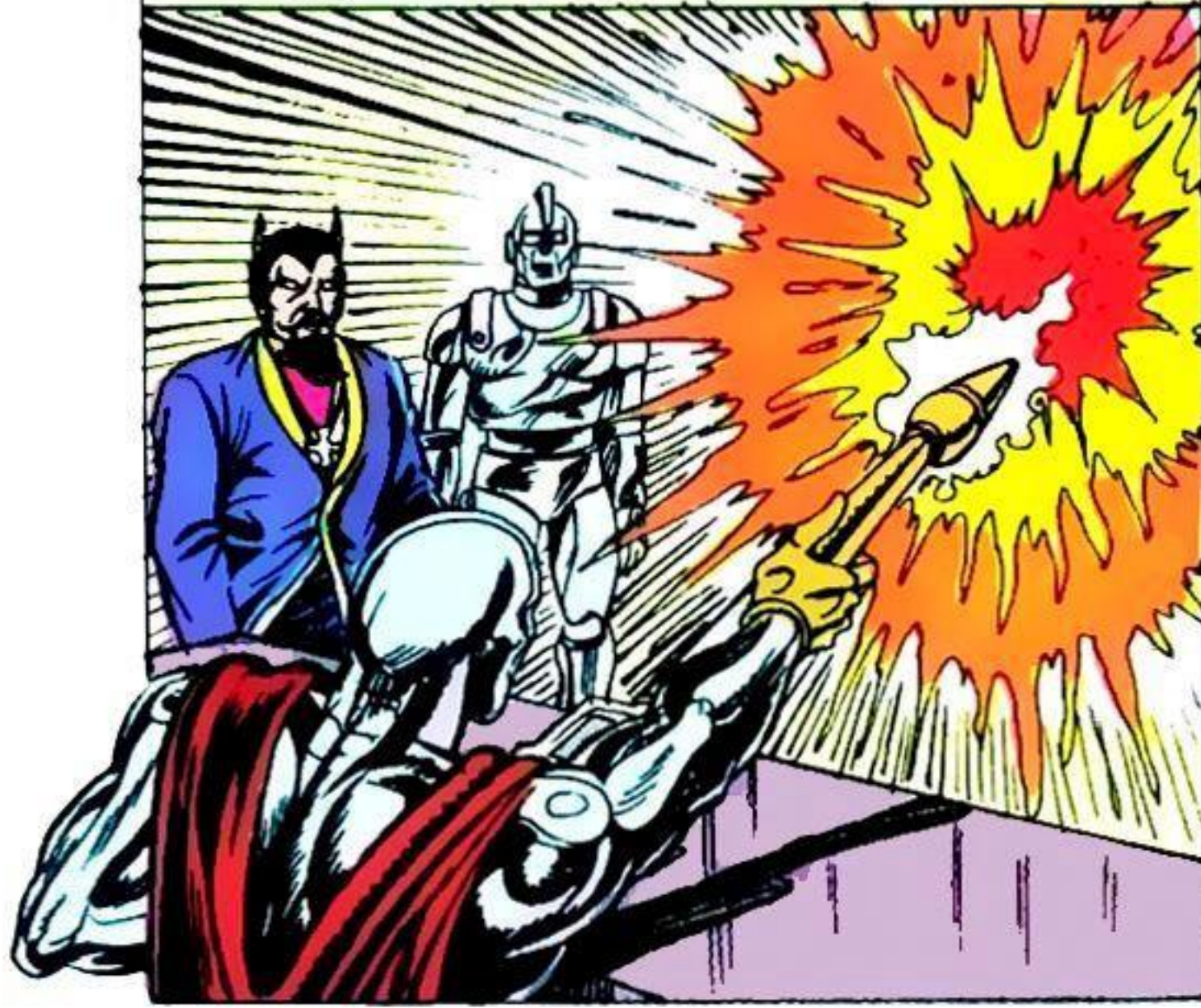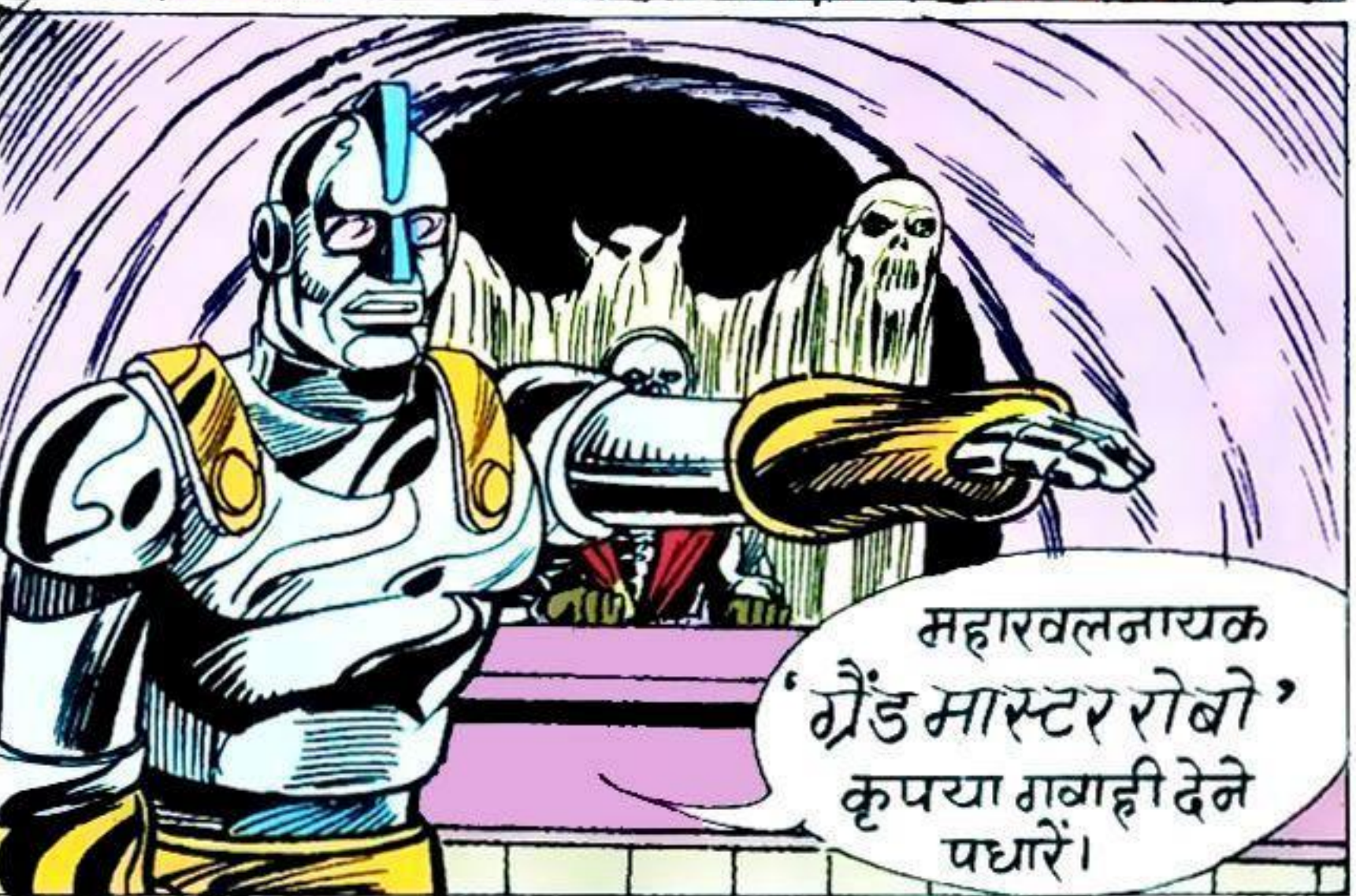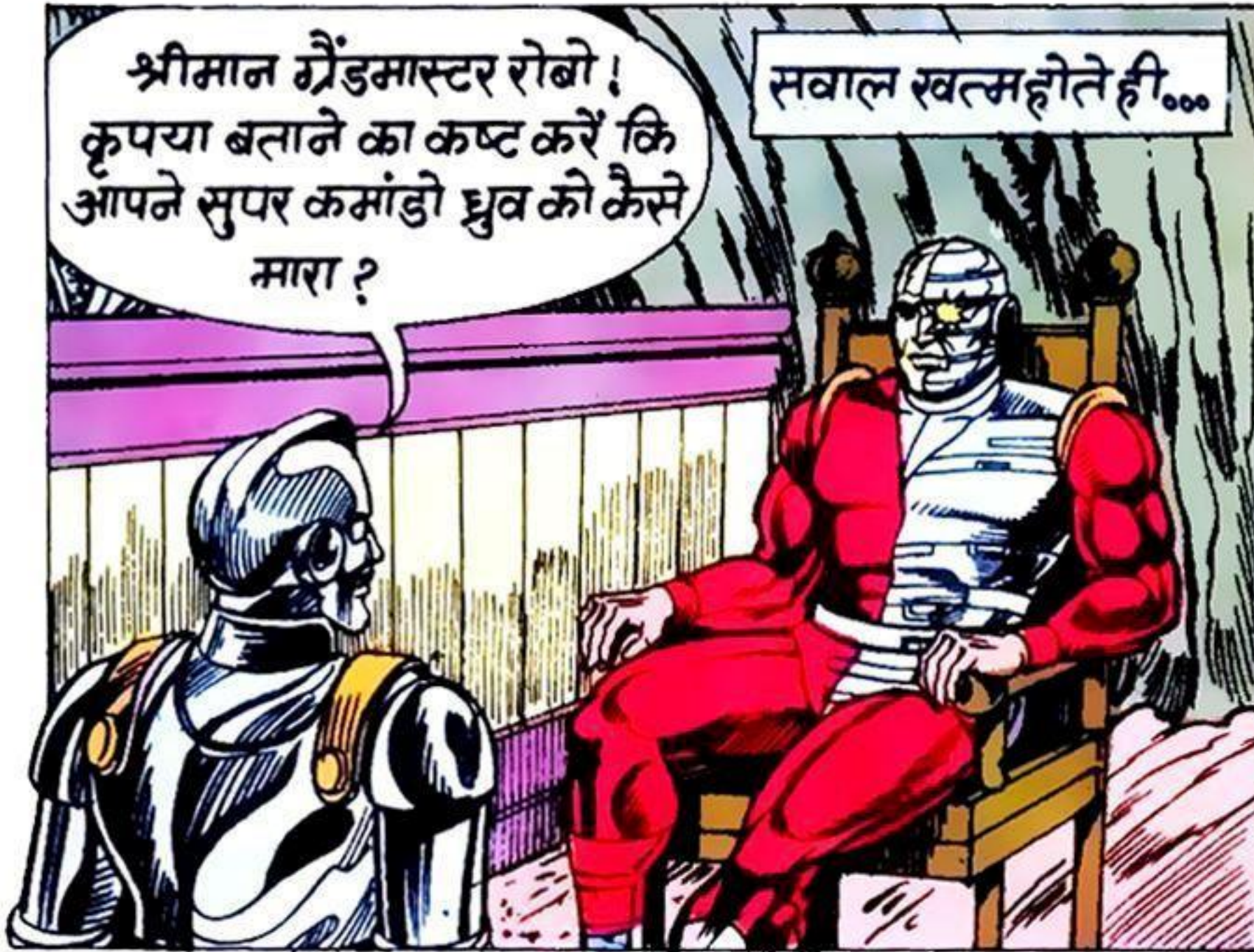
मैंने मारा ध्रुव को
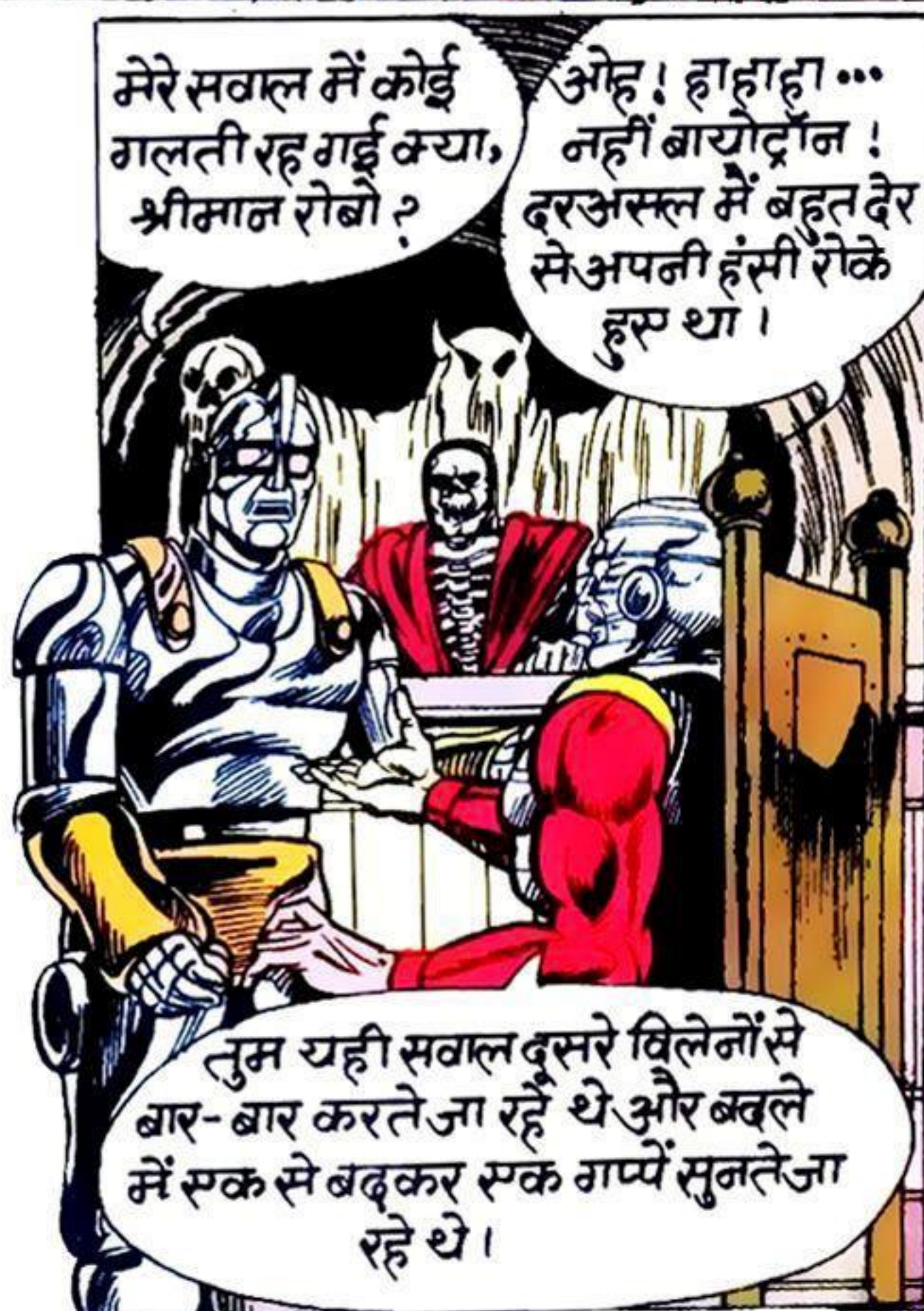
मेरे सवाल में कोई गलती रह गई क्या, श्रीमान रोबो?

ओह! हा हा हा... नहीं बायोट्रॉन! दरअसल मैं बहुत देर से अपनी हंसी रोके हुए था।

तुम यही सवाल दूसरे विलेनों से बार-बार करते जा रहे थे और बदले में एक से बढ़कर एक गप्पें सुनते जा रहे थे।

हम आपकी कथा सुनने को उत्सुक हैं, श्रीमान रोबो!

मेरी कहानी बड़ी सीधी-सादी सी है! क्योंकि वह एक सच्चाई है। कोई लच्छेदार गप्प नहीं!
सुपर कमांडो ध्रुव का सबसे पुराना दुश्मन हूं मैं। ग्रैंड मास्टर रोबो! दुनिया का नम्बर एक आतंकवादी!
मेरी ध्रुव से तीन बार मुठभेड़ हुई। और इन मुठभेड़ों ने मुझे बर्बादी के कगार पर ला खड़ा किया। मेरा संगठन छिन्न-भिन्न हो गया।
इसीलिए मैं व्यापारी बन गया!
अवैध हथियारों का व्यापारी!
मेरे कई आदमी पकड़े गए, और कुछ ध्रुव के डर से मेरा संगठन छोड़ गए! संगठन को दुबारा बनाने के लिए मुझे पैसों की जरूरत थी!
मेरे हथियार किराए पर चलते हैं! अफगानिस्तान के गुरिल्ला संगठनों को मैंने हथियार सप्लाई किए। उनका काम खत्म होने पर वही हथियार पंजाब चले गए।...
...वहां से कश्मीर और फिर न जाने कहां-कहां! श्रीलंका के गुरिल्ला को भी मैंने कई हथियार किराए पर दिए हैं।
इसमें डबल फायदा था! एक तो मेरे हथियार मेरे पास वापस आ जाते थे और साथ ही आ जाती थी उनके किराए की एक मोटी रकम!
मेरे पास पैसों का एक बड़ा भंडार जमा हो...
श्रीमान रोबो! हम आपके व्यापार का हिसाब-किताब जानने के इच्छुक नहीं हैं!
हम यह जानना चाहते हैं... कि आपने श्रीमान ध्रुव को कैसे मारा?

मैं भी यहां पर बकवास करने नहीं आया। मेरा यह सब बताने का एक कारण है•••
••• और वह कारण यह समझाना है कि ध्रुव की तरफ से खतरा होने के बावजूद भी मैंने राजनगर को ही अपना मुख्य अड्डा क्यों बनाया?
दरअसल मेरा धंधा इसी इलाके में ही फलता-फूलता है। और राजनगर इस पूरे क्षेत्र का व्यापारिक केन्द्र है।
इसी राजनगर को ही मुझे अपना मुख्य अड्डा बनाना पड़ा
गड़बड़ एक मामूली सी बात से शुरू हुई—
उस दिन- मेरा गोलियों का एक बड़ा कंसाइनमेंट, गोनी बीच से, मेरे गोदाम आ रहा था—
अचानक गाड़ी की हैडलाइटों ने, सुनसान सड़क पर खड़ी एक आकृति को चमका दिया—
कहने को तो थी वह एक आकृति ही•••
••• लेकिन मेरे ड्राइवर के लिए वह भूत से भी ज्यादा खतरनाक थी—
सुपर कमांडो ध्रुव को किसी तरह पता चल गया था कि इस गाड़ी में अवैध माल भरा है।
पर वह भी एक गलती कर गया था।
उसने गाड़ी को एक संकरी सड़क पर रोकने की कोशिश की थी! अगल-बगल बचने की कोई जगह नहीं थी—
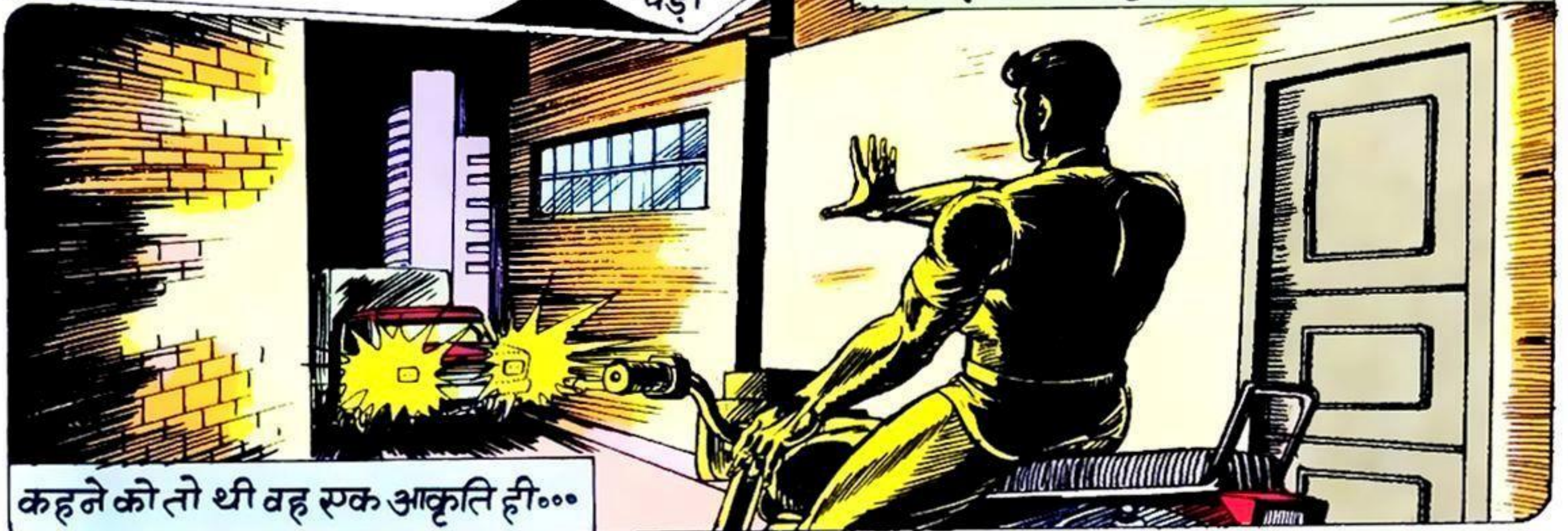
ड्राइवर के चेहरे पर मुस्कराहट खेल रही थी—

अब वह सुरक्षित था—

इस टक्कर से अगर किसी का नुकसान होना था, तो सुपर कमांडो ध्रुव का—

मतलब... अगर टक्कर हो पाती तो...

ठक्क

धड़

धम्म

भय से कांपते उसके पैर,एक्सीलेरेटर को और तेजी से दबाने लगे—

पर वह तो पहले ही पूरा दबा हुआ था—

...ड्राइवर के चेहरे पर फैली मुस्कान कितनी जल्दी वापस सिमट गई होगी, इसका अंदाजा मैं बिना बताए लगा सकता हूं—

इसके बावजूद भी ध्रुव इतनी तेजी से उसके पीछे आ रहा था मानो गाड़ी खड़ी हुई हो—

इतनी तेज़ी से आते हुए भी उसने एक ईंट उठा ही ली थी—

सधे हुए निशाने से वह ईंट, पहिए और गाड़ी की बॉडी के बीच में आ फंसी—

पलभर के लिए वह पहिया, जाम हो गया—

और गाड़ी लहराकर, बगल की दीवार से जा टकराई—
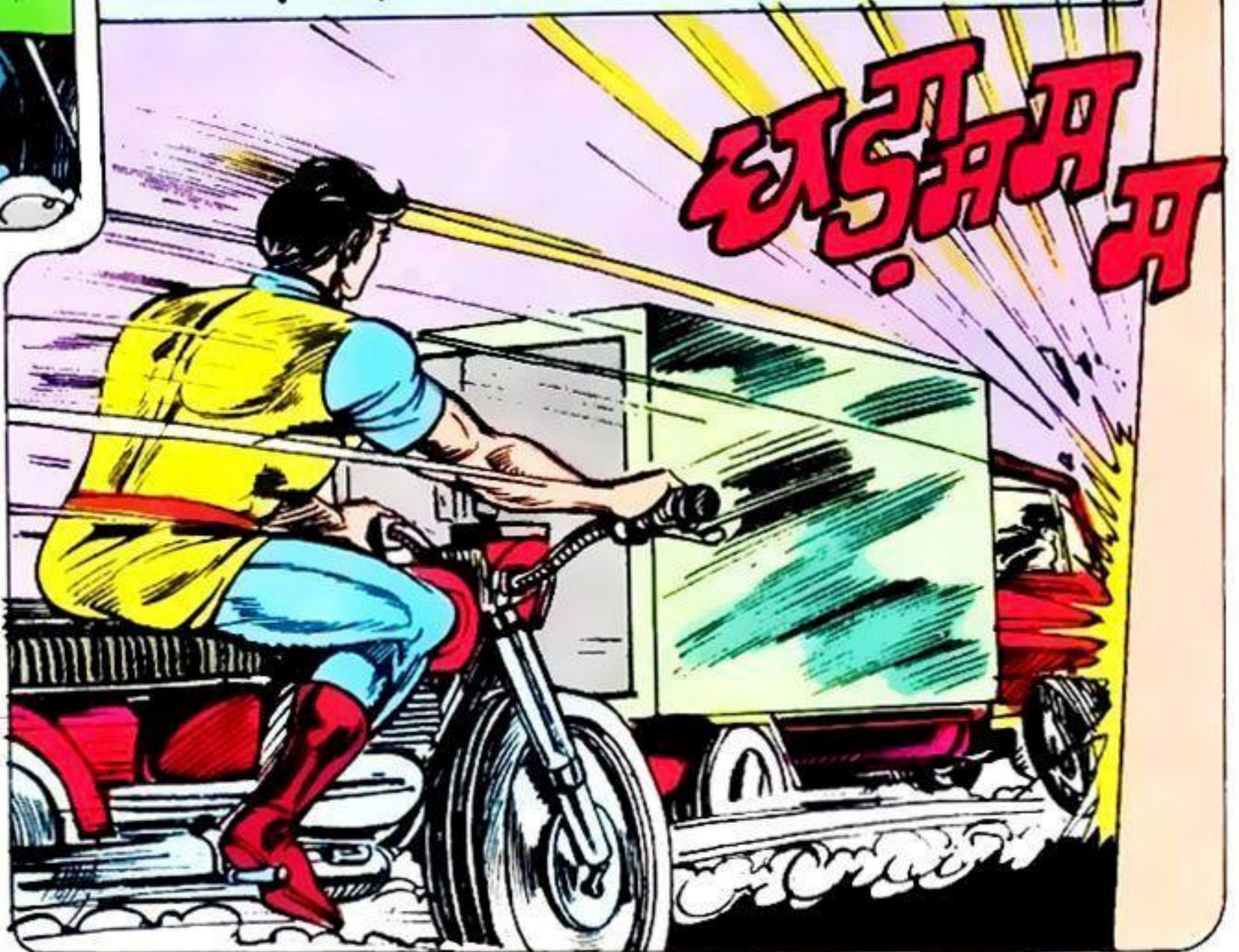
ध्रुव भी, तेज रफ्तार से आती अपनी मोटरसाइकल को रोक नहीं पाया—

और मोटरसाइकल भी टकरा कर नीचे आ गिरी—

और मेरे आदमी को भागने का मौका मिल गया—

उसने सबसे बड़ी मूर्खता यह करी कि वह अपने अड्डे की तरफ ही भागा—

उसका अड्डा- यानी मेरा गोदाम-

बीच-बीच में वह पीछे मुड़कर देखता भी जा रहा था—
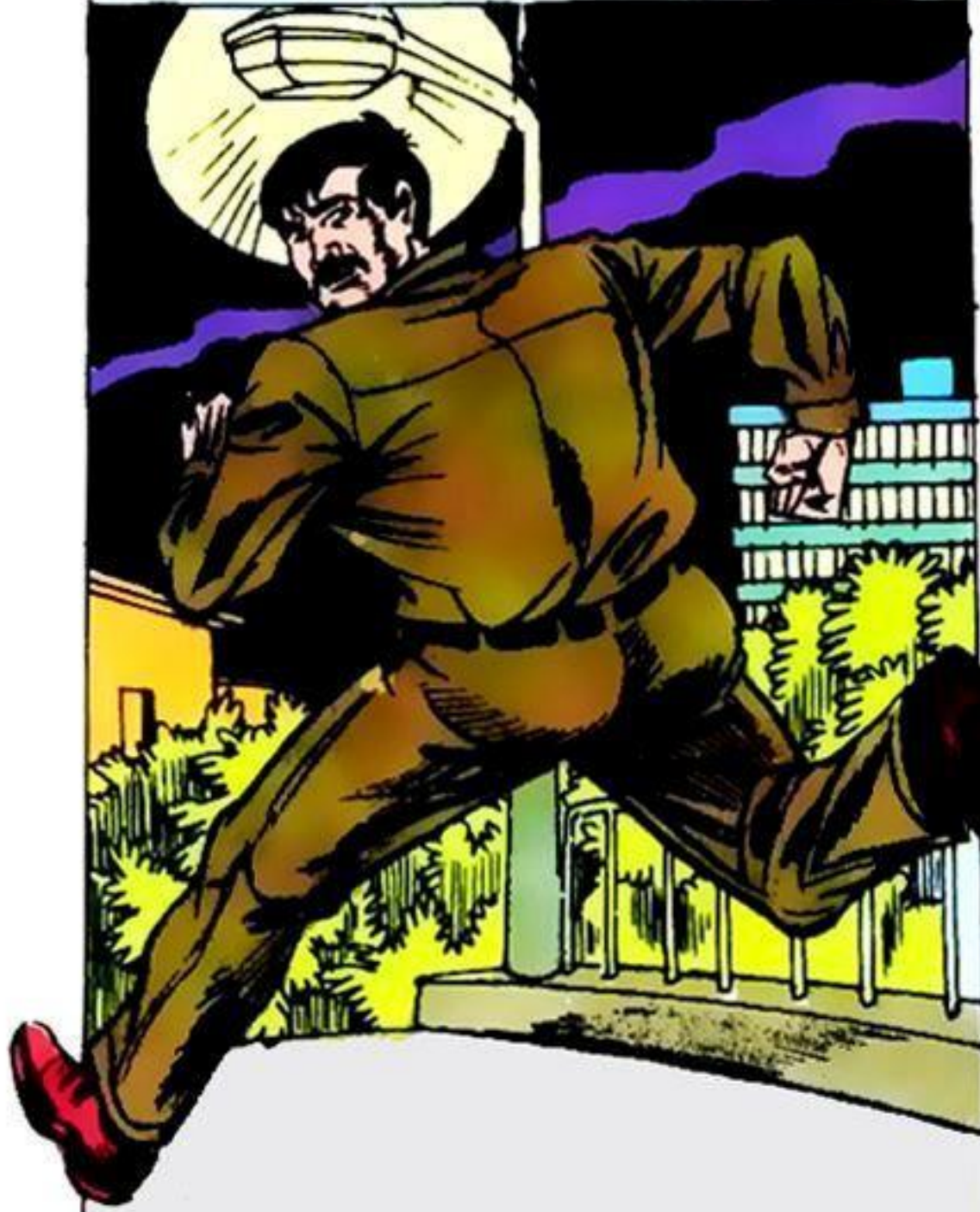
ध्रुव कहीं नजर नहीं आ रहा था—

वह निश्चिन्त हो गया—

वह गोदाम में एक झटके से अंदर घुसा—

भय से कांपते हुए वह सारी घटना बयान करता चला गया—

और हर शब्द के साथ मेरे दिमाग में शोले भरते चले गए—

मेरी क्रोध भरी आवाज से, हर शख्स के साथ-साथ गोदाम का कोना-कोना तक कांप उठा—

वह तुम्हारे पीछे ही लगा होगा मूर्ख! और अब वह यहां आता ही होगा! अगर वह जिंदा वापस गया तो समझो, तुम सब मर गए!

मेरी आवाज की गूंज खत्म होते ही, एक और आवाज वातावरण में उभरी—

मेरे आदमी अलग-अलग जगहों पर छिपे बैठे थे...
...घात लगाए-
ध्रुव पर हमला करने को तैयार-
ठक
उस 'ठक' की आवाज़ के साथ ही...
...गोदाम में कहर टूट पड़ा-
शायद चाकू आने की दिशा ने ध्रुव को पहले आदमी का पता बता दिया था-
मेरे आदमी, अपनी मूर्खता में ध्रुव पर हमला करते जा रहे थे। और हर वार, ध्रुव को अपने दुश्मन के छिपने की जगह का पता बता रहा था-
मैं चाहकर भी अपने आदमियों को कोई सलाह नहीं दे सकता था-

मैंने अपने आदमियों पर भरोसा करके बहुत बड़ी गलती की थी—
अब मेरा भांडा फूटने ही वाला था—
मैं खुद बाहर निकलकर ध्रुव का सामना करने की सोच ही रहा था—
तभी एक आवाज ने मेरे कदम रोक दिए—
बोलो! तुमने अपने आदमी को कहां पर छिपाकर रखा है?
क्लिक
क... कौन सा आदमी... अरे, बादशाओ! आप तो सुपर कमांडो ध्रुव हो...
बड़ी गलती हो गई जी! असी अंधेरे में आपको पहचान नहीं पाए!
वह आदमी किधर गया!
कौन सा आदमी जी?
अरे, गोविन्द! उधर देख! वो कौन है?
ये! ये तो कोई चोर लगता है जी। हमारे गोदाम का आदमी नहीं है!
ओह! यानी ये मुझसे बचने के लिए यहां पर आकर छिप गया था!
आहो जी! पर आप इसके पीछे कैसे लग गए?
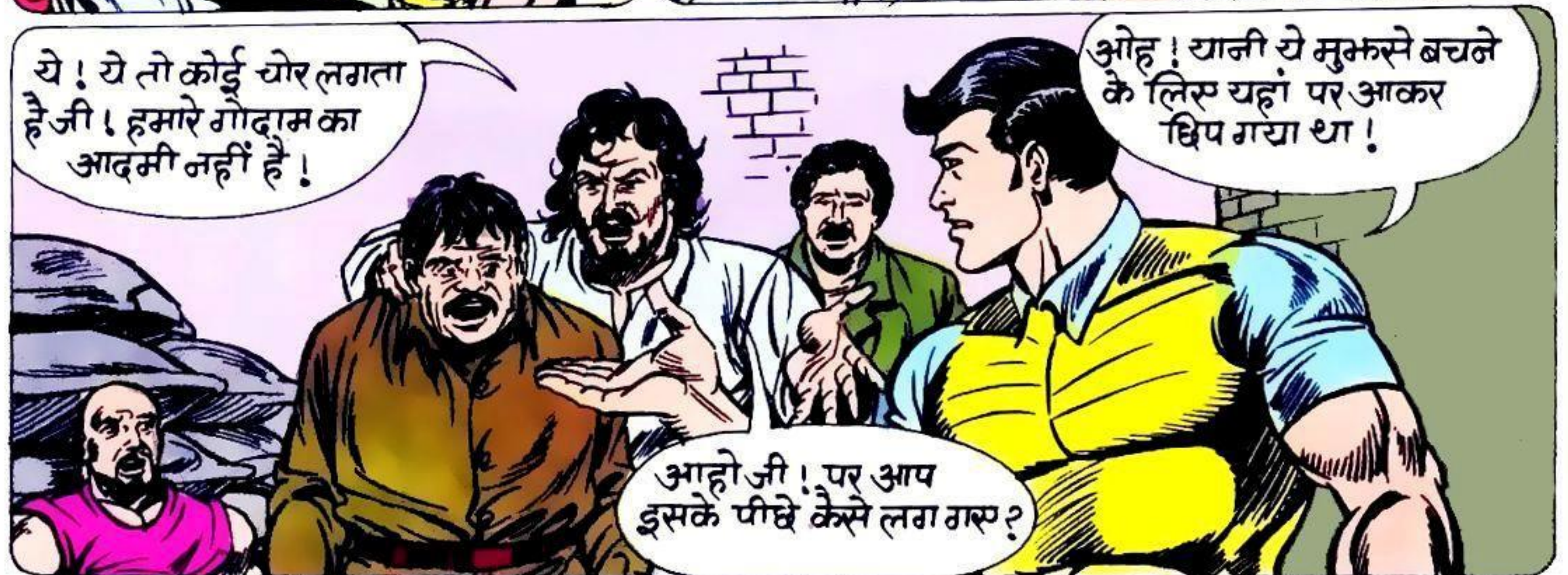
ये अवैध गोलियों से भरी एक गाड़ी लेकर भाग रहा था। एक गोली न जाने कैसे गाड़ी से गिर पड़ी। एक कुत्ते ने उसे उठाकर मुझ तक पहुंचाया।
और इस गाड़ी का हुलिया भी बताया।
बस! वहीं से मैं इसके पीछे लग गया।
ओऽऽऽ! आप जानवरों से बात कर लेते हो? कमाल है जी!
इसको ले जाओ, साब जी! ऐसी मार मारना कि सम्गलिंग करना ही भूल जावे!
मेरे आदमी गोविन्द ने दिमाग का अच्छा इस्तेमाल किया था। उसने पूरी स्थिति को बखूबी संभाल लिया था—
अगले दिन के अखबारों में ध्रुव का पूरा कारनामा छपा था—
सुपर कमांडो ध्रुव ने तस्कर को रंगे हाथों पकड़ा
गोदाम में मुठभेड़ हुई! गोलियां भी पकड़ी गईं!
और उसमें मेरे गोदाम का भी ज़िक्र था।
और उसी रात को हमने उस गोदाम को खाली करने की तैयारी शुरू कर दी—
ध्रुव, ड्राइवर को अपने साथ ले गया।
मैं जानता था कि मेरा ड्राइवर अपना मुंह कभी नहीं खोलेगा! लेकिन फिर भी, मैंने गोदाम को अगले ही दिन वहां से हटाने का इरादा कर लिया था।
मेरा निर्णय एकदम सही था।
कल तूने बहुत अच्छा नाटक किया गोविन्द!
तुझे इसका भरपूर इनाम मिलेगा!
बंबइया फिल्म इंडस्ट्री में बहुत स्ट्रगल किएला है बॉस!
मौका मिलता तो अमिताभ बच्चन की भी छुट्टी कर देते!
ठीक है, ठीक है। अभी चलकर ट्रक में जल्दी-जल्दी माल लदवा...
सारा काम, अंधेरे में ही हो रहा था—

गोविन्द माल लदवाने के लिए बढ़ने ही वाला था कि तभी—
एक हल्की सी आहट ने हम सबको खामोश कर दिया—
कट
ट्रक के पीछे से एक परछाई हिली—
और चांद की रोशनी में एक पीली और नीली पोशाक चमक उठी—.
ध्रुव को पहले ही दिन शक हो गया था—
इसीलिए वह दुबारा गोदाम की छानबीन करने आया था—
मेरे पास भी छिपने का मौका नहीं था—
हमारा आमना-सामना हो ही गया—
पर न जाने क्यों मुझे देखकर, ध्रुव घबरा सा गया—
ग... ग्रैंड-मास्टर रोबो! सुनो...
उसके बाद मैंने उसको एक पल की भी मोहलत नहीं दी—
मेरी 'लेसर आई' चमक उठी—
और ध्रुव का सिर, अपने धड़ पर से गायब हो गया—
वातावरण, जलते मांस की बू से भर गया—
लेकिन उस 'बू' का मुकाबला सारी दुनिया के इत्र मिलकर भी नहीं कर सकते—
क्योंकि वह सुपर कमांडो ध्रुव के मरने की खुशबू थी—
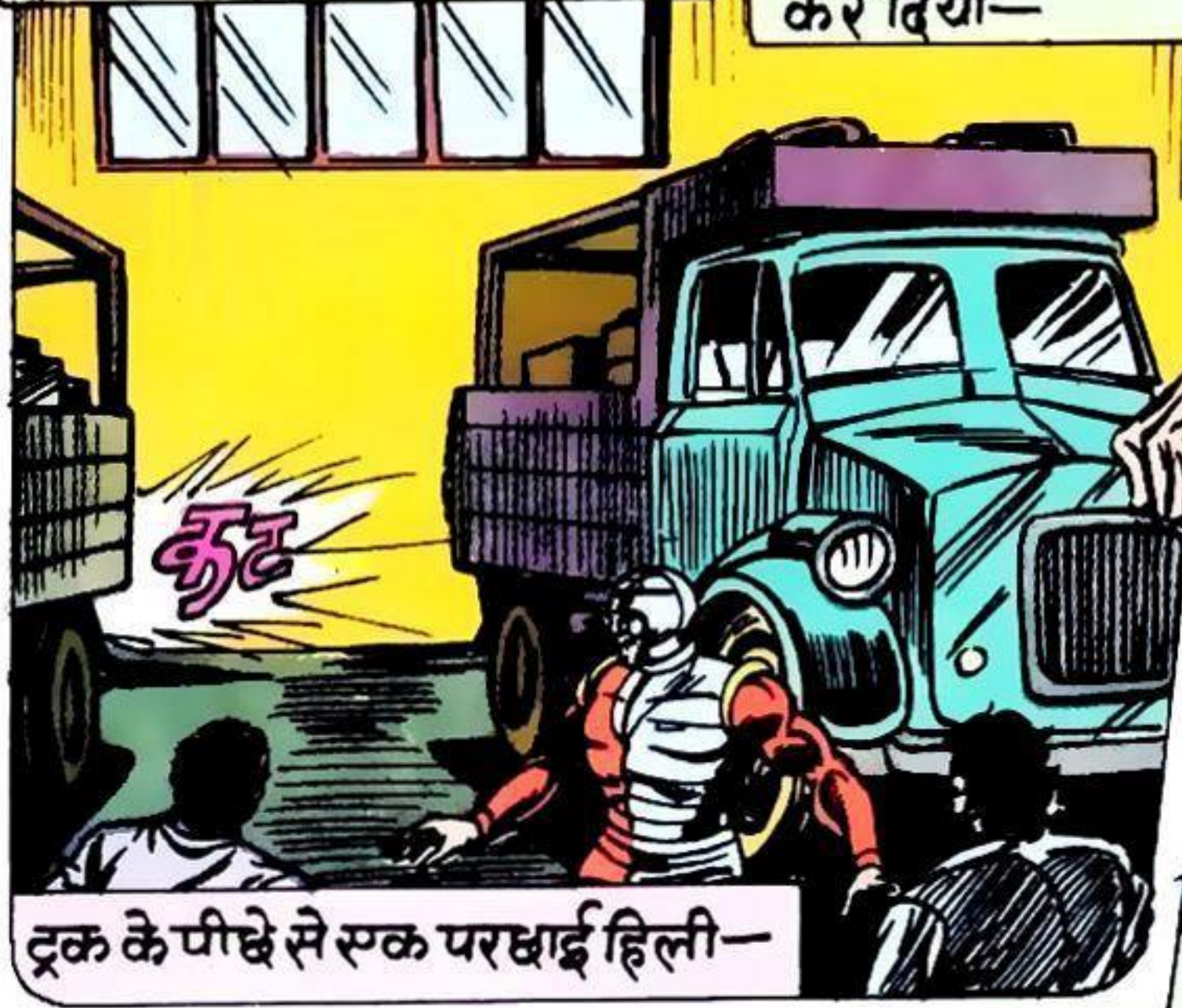
ध्रुव की लाश मेरे सामने पड़ी हुई थी—
मर गया था ध्रुव—
मैंने मारा था ध्रुव को—

ध्रुव की लाश को वहीं छोड़कर, हम वहां से निकल लिए—
जाने से पहले, मैंने गोदाम में, अपने रहने के सारे सबूतों को मिटा दिया था—

फिर मैं अगले दिन की धमाकेदार खबर का इंतजार करने लगा। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। कहीं पर भी कोई खबर नहीं थी।
न अखबार में, न रेडियो पर, और न टी॰वी॰ पर। खबर को पूरी तरह से दबा दिया गया था।
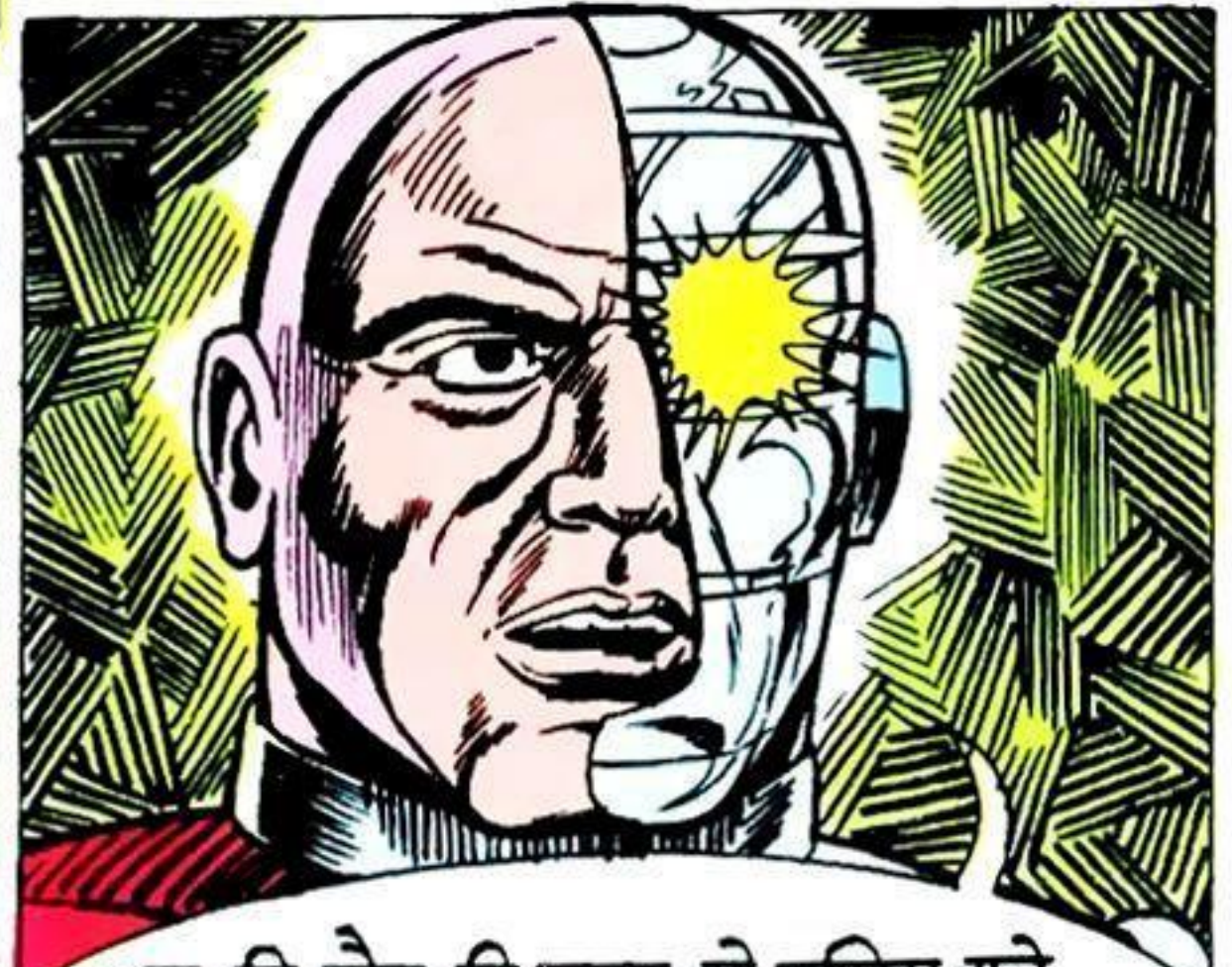
ध्रुव की मौत की खबर को पुलिस वाले गुप्त रखना चाहते थे। लेकिन फिर भी, यह खबर अपराधियों के बीच में फैल गई, और हर अपराधी, ध्रुव को मारने का दावा करने लगा।

जबकि सच्चाई मैंने सबके सामने बयान कर दी है। सुपर कमांडो ध्रुव को मैंने मारा है।
मैंने मारा ध्रुव को।

हम्म्! आपकी कथा में कोई गलती नहीं है, श्रीमान रोबो!
पर आपकी कथा का कोई गवाह भी नहीं है। आपकी कथा की सत्यता को परखा कैसे जा सकता है?
मैं मूर्ख नहीं हूं, बायोट्रॉन!

ध्रुव की लाश को गोदाम में छोड़कर जाने से पहले, मैंने उसकी बेल्ट उतार ली थी...
वह 'स्टार-बेल्ट' मेरे पास है!
और वही मेरी कहानी का सबूत है!
वाह! क्या आप वह बेल्ट हमें दिखाने का कष्ट करेंगे?
ऐसा सबूत मैं साथ लिए नहीं घूमता, बायोट्रॉन! वह बेल्ट मेरे 'अड्डे' के एक 'सुपर स्ट्रांग लॉकर' में सुरक्षित रखी है।
आप जाकर वह बेल्ट ले आइए, ग्रैंडमास्टर रोबो! वह देखने और परखने के बाद ही हम फैसला करेंगे!
मैं अभी आता हूं। और अपना दावा साबित करके ही वापस जाऊंगा!
अग्निद्वार ने रोबो को, तुरन्त अपने अड्डे पर पहुंचा दिया—
हाहाहा... क्या गप्पें सुनने को मिलीं!
चांद की सतह पर मारा, सांप-सीढ़ी के खेल पर मारा, डायनामाइट से उड़ा दिया...
... ध्रुव का शरीर विखंडित कर दिया!
लेकिन मैं तो जानता ही था कि ध्रुव को मैंने ही मारा है...
और ये रहा मेरा सबूत!
सुपर कमांडो ध्रुव की बेल्ट!

वाह ! अब तुम यह बेल्ट और अपने-आपको मेरे हवाले कर दो, ध्रुव के हत्यारे !
कंकालतंत्र ! तुम यहां पर क्यों आए ?
मैं धनंजय हूं, ग्रैंडमास्टर रोबो ! स्वर्ण नगरी का धनंजय ! वही स्वर्ण नगरी, जिस पर जब तुमने हमला किया था, तो मैंने और ध्रुव ने तुमको मुंह तोड़ जवाब दिया था।
कुछ गड़बड़ लगती है। कौन हो तुम ?
ओह ! ये सब ध्रुव के हत्यारे को पकड़ने का नाटक था !
हां। और तुम सभी इस नाटक के दर्शक भी थे, और पात्र भी।
ओह ! यानी... बाकी सब विलेन कहां पर हैं, धनंजय ?
तुमने उनको कहां पर भेज दिया है ?
हर खलनायक अपनी सही जगह पर जा चुका है। ध्वनिराज, बौनावामन, ब्लैककैट, डॉक्टर वायरस, चुंबा सभी पुलिस हिरासत में हैं। और चंडकाल स्वर्ण नगरी में।

और अब तुम चुपचाप मेरे साथ चलोगे, या फिर मुझे अपनी वैज्ञानिक शक्तियों का प्रयोग करने पर मजबूर करोगे?
धोखेबाज़
मैं तुझे भी ध्रुव जैसी ही मौत दूंगा। जलाकर खाक कर दूंगा मैं तुझको!
बेकार की चेष्टाएं मत करो रोबो!
तुम्हारा कोई भी वार मेरे 'ऊर्जा-कवच' को भेद नहीं सकता...
...लेकिन तुम मेरे एक मामूली से वार को भी नहीं सह पाओगे।
आह!
मैं तेरे 'ऊर्जा कवच' को नहीं भेद सकता। पर तू भी एक गलती कर रहा है!
तेरे जूते धातु के हैं। और यह फर्श भी धातु का बना है।
और तेरे जूतों और फर्श के बीच में कोई 'ऊर्जा कवच' नहीं है।
अब अगर तू चार सौ चालीस वोल्ट का करंट झेल सकता है, तो झेल ले!
झटका सचमुच भयंकर था! धनंजय का अंग-अंग थर्रा उठा—
और फिर- उसका दिमाग बेहोशी के सैलाब में डूबता चला गया—
और साथ ही साथ उसका 'ऊर्जा-कवच' भी लुप्त होने लगा—
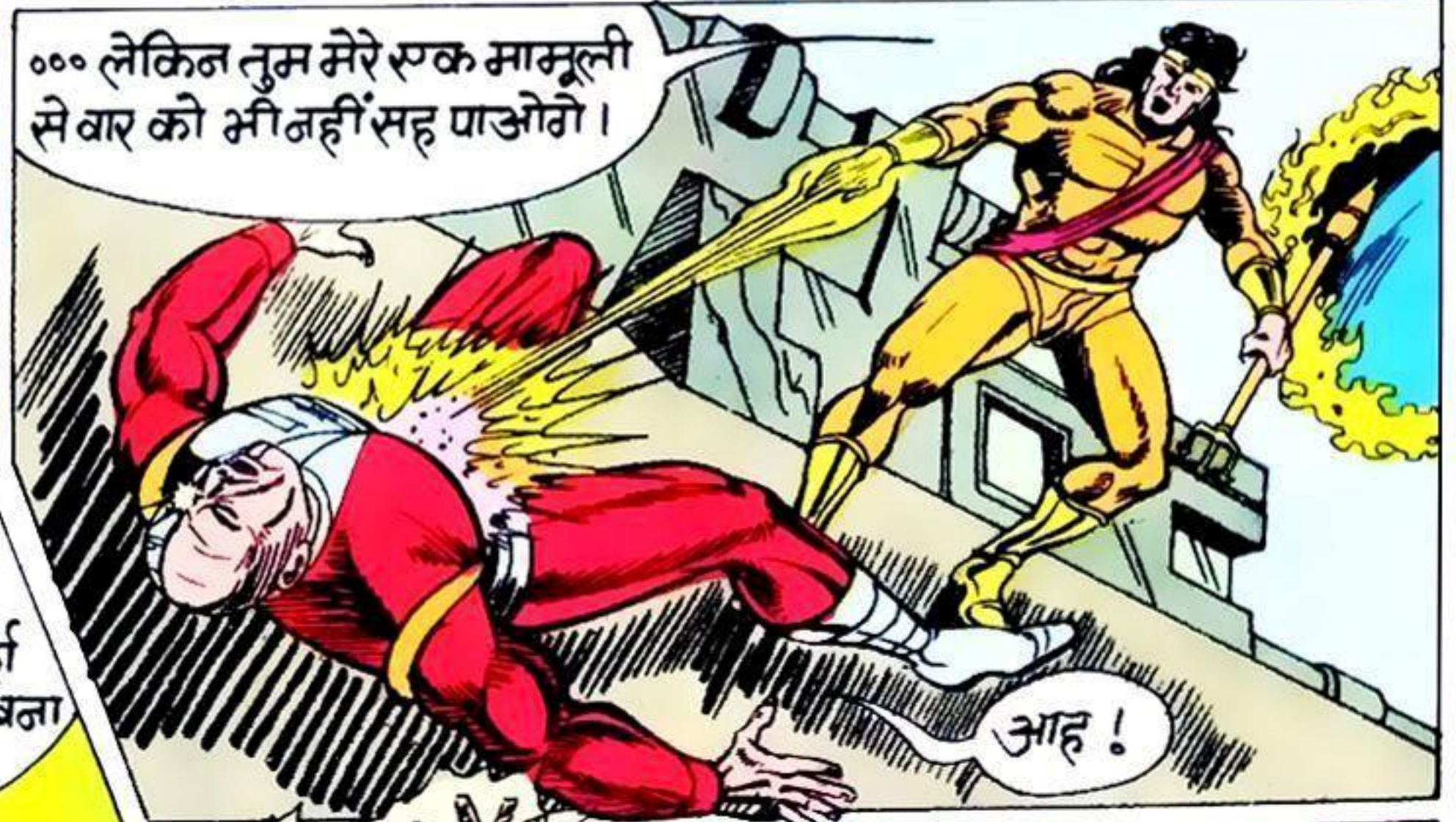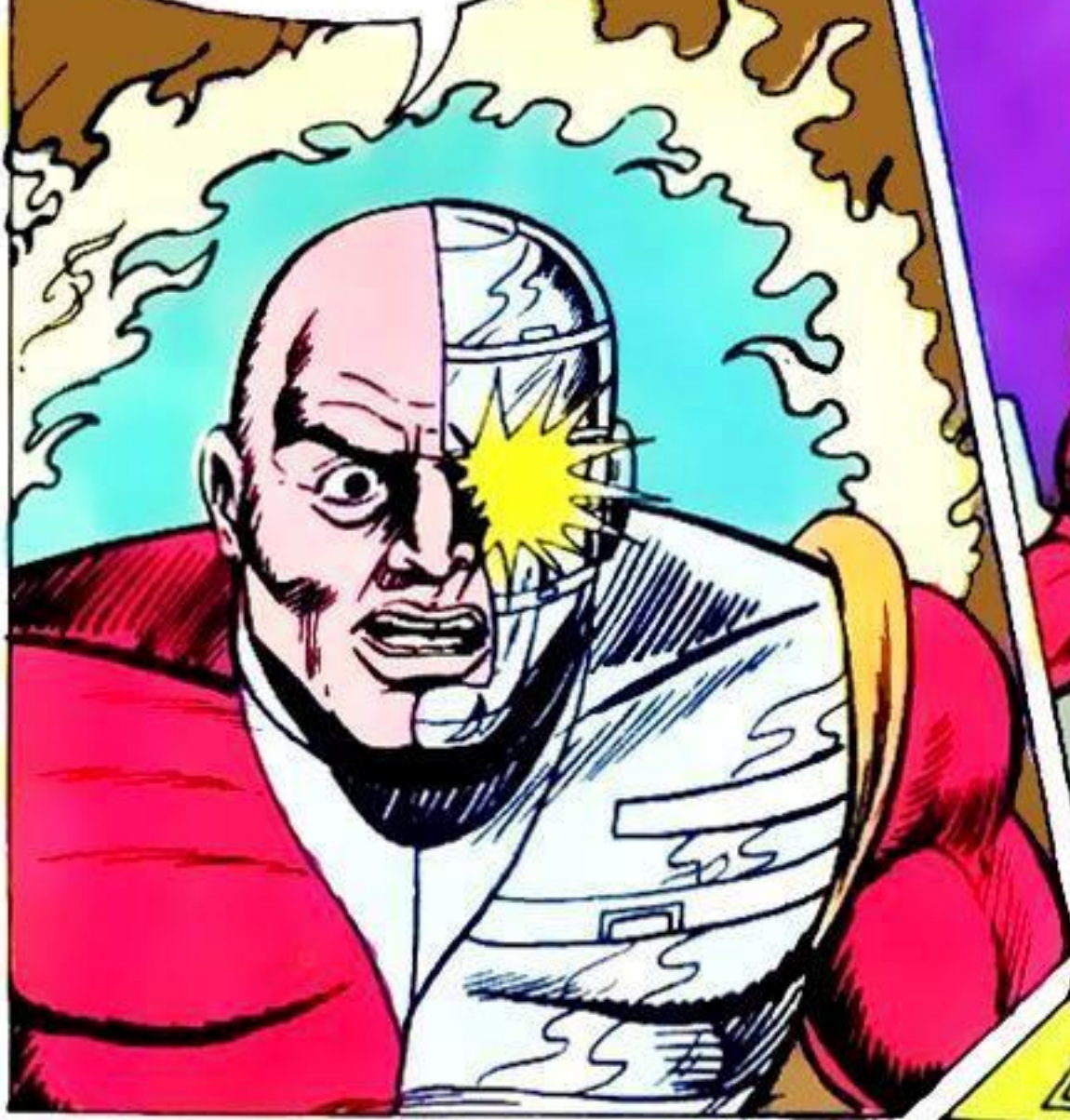
अब मैं तुझे भी ध्रुव के पास भेज दूंगा, धनंजय!
लेकिन इससे पहले कि रोबो की लेसर किरण, धनंजय के शरीर में सुराख कर पाती—
ओह, बायोट्रॉन!
तो अब तू अपने स्वामी की रक्षा करेगा?
लेकिन रोबो ने तेरे जैसे कई रोबोटों को बचपन में ही तोड़ डाला है।
धड़ाक
अब मैं तेरे धातु के बने शरीर की पर्तों को, प्याज की तरह छीलूंगा।
बायोट्रॉन ने 'लेसर किरणों' से बचने की कोई कोशिश नहीं की—
बल्कि उसके मशीनी हाथ, खुद ही अपने-आप को फाड़ने लगे—
पर्तें दर पर्तें उखड़ने लगीं—
कर्र्र्र
और रोबो की इकलौती आंख फैलती चली गई—
सांस, नाक में ही रुककर रह गई—
आवाज गले में घुट गई—

अपनी जिन्दगी का सबसे आश्चर्यजनक दृश्य देख रहा था वह—
ध... ध्रुव! ध्रुव! तुम बायोट्रॉन थे! तुम जिन्दा कैसे हो? असंभव! मैंने तो तुमको मार डाला था! तुम बच कैसे गए?
सोचो! तुमको ठीक से हत्या करनी तक नहीं आती है, रोबो!
इतना बड़ा धोखा! इतना बड़ा? सारे अपराधियों को एक साथ धोखा दिया गया!
लालच करोगे तो धोखा खाओगे ही! पूरी दुनिया पर राज्य करने के लालच ने ही तुम लोगों को इस हालत में पहुंचाया है।

पहली बार तो शायद कहीं गलती रह गई। लेकिन इस बार गलती नहीं होगी, ध्रुव।

सच कहता है तू! तू बच सकता है!

लेकिन ये बेहोश धनंजय नहीं बच सकता! अब अगर तू हिला, तो मैं एक 'लेसर ब्लास्ट' से इसकी खोपड़ी उड़ा दूंगा!
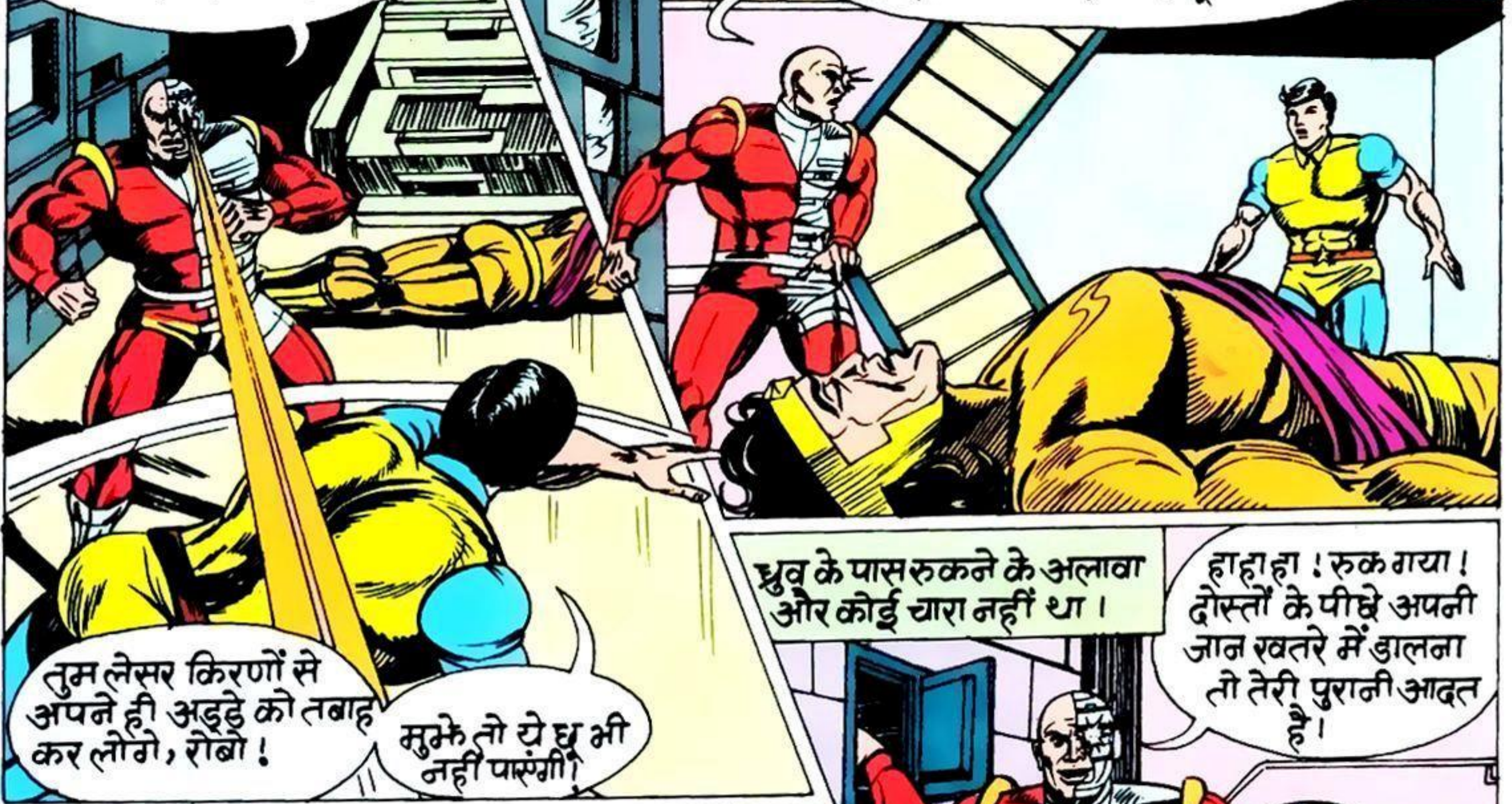
तुम लेसर किरणों से अपने ही अड्डे को तबाह कर लोगे, रोबो!

मुझे तो ये छू भी नहीं पाएंगी!

ध्रुव के पास रुकने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

हा हा हा! रुक गया! दोस्तों के पीछे अपनी जान खतरे में डालना तो तेरी पुरानी आदत है।

ले! ये दो हथकड़ियां!

एक अपने हाथों में डाल! और दूसरी अपने पैरों में।

अब अपनी मौत से बचकर दिखा लड़के!

ठीक से! हाथों को पीछे करके! हां!

वाह! अब मैं तेरा नहीं, बल्कि तू मेरा कैदी है।

पैरों में भी बांध।

ध्रुव का शरीर, तेजी से जमीन पर गिर गया—

और लुढ़कता हुआ, उसका शरीर कक्ष से बाहर निकल गया—
हाहाहा ! भाग रहा है । भागकर कहां तक जाएगा ?
अब मुझे भागने की जरूरत नहीं है ! मैं रोबो को धनंजय से दूर ले आया हूं ।
रुक क्यों रहे हो रोबो ? वार करो । खत्म कर दो मुझको ।
झुंझलाए रोबो की आंख चमक उठी—
कड़ाक
और ध्रुव के पैर आजाद हो गए—
अगले ब्लास्ट ने ध्रुव के हाथों को भी आजाद कर दिया—
कड़क
रोबो मुझ पर लेसर किरणों से वार कर रहा है । ये लेसर किरणें, प्रकाश किरणों का ही एक घातक रूप होती हैं...
...और इनको भी प्रकाश किरणों की तरह, परावर्तित किया जा सकता है ।
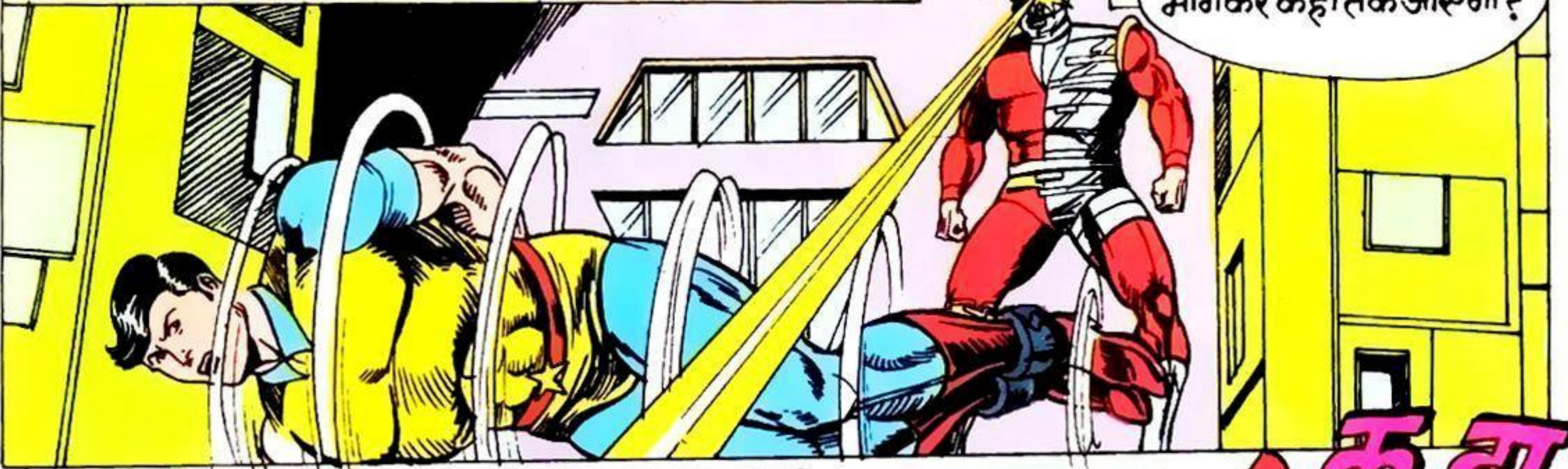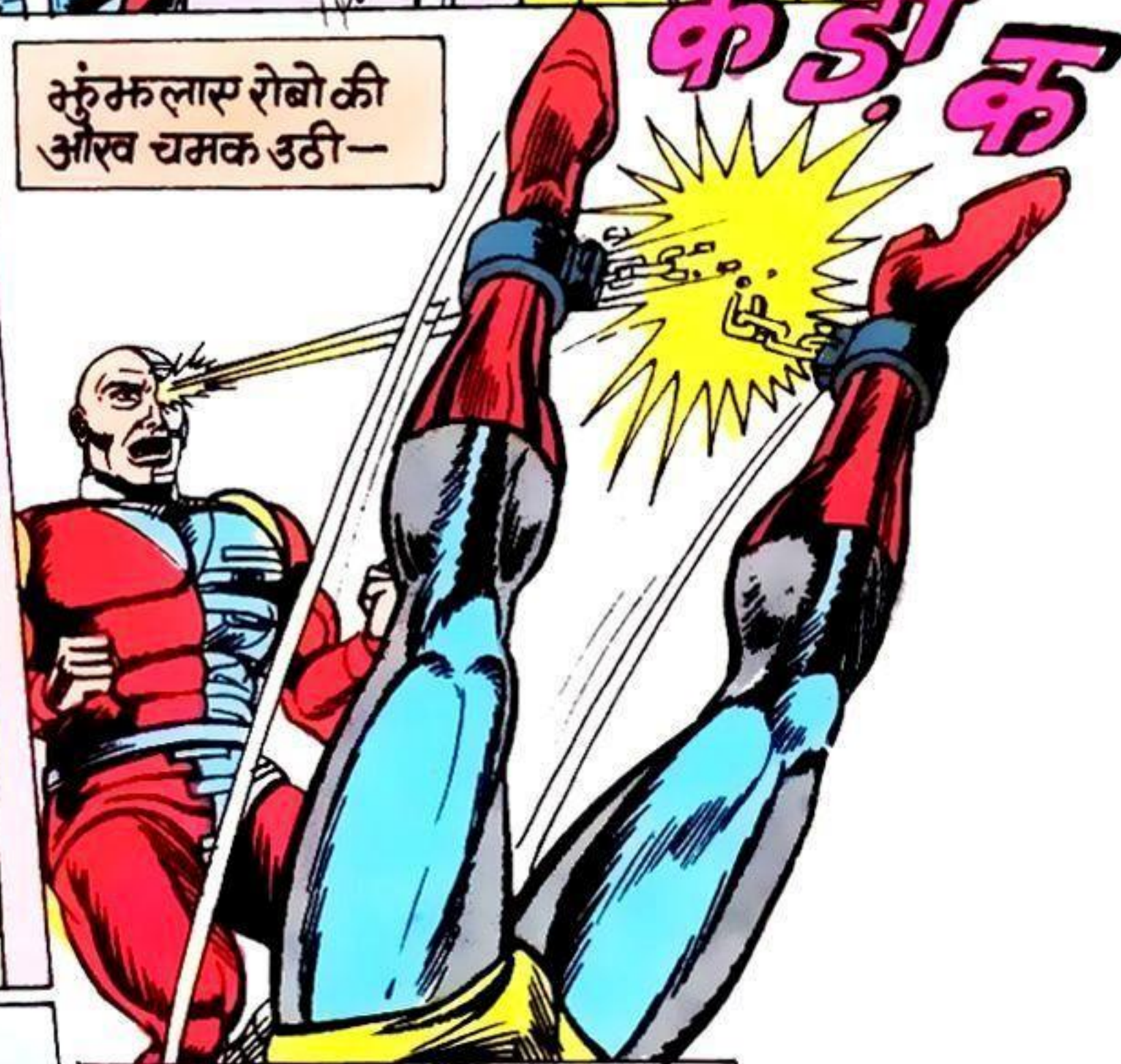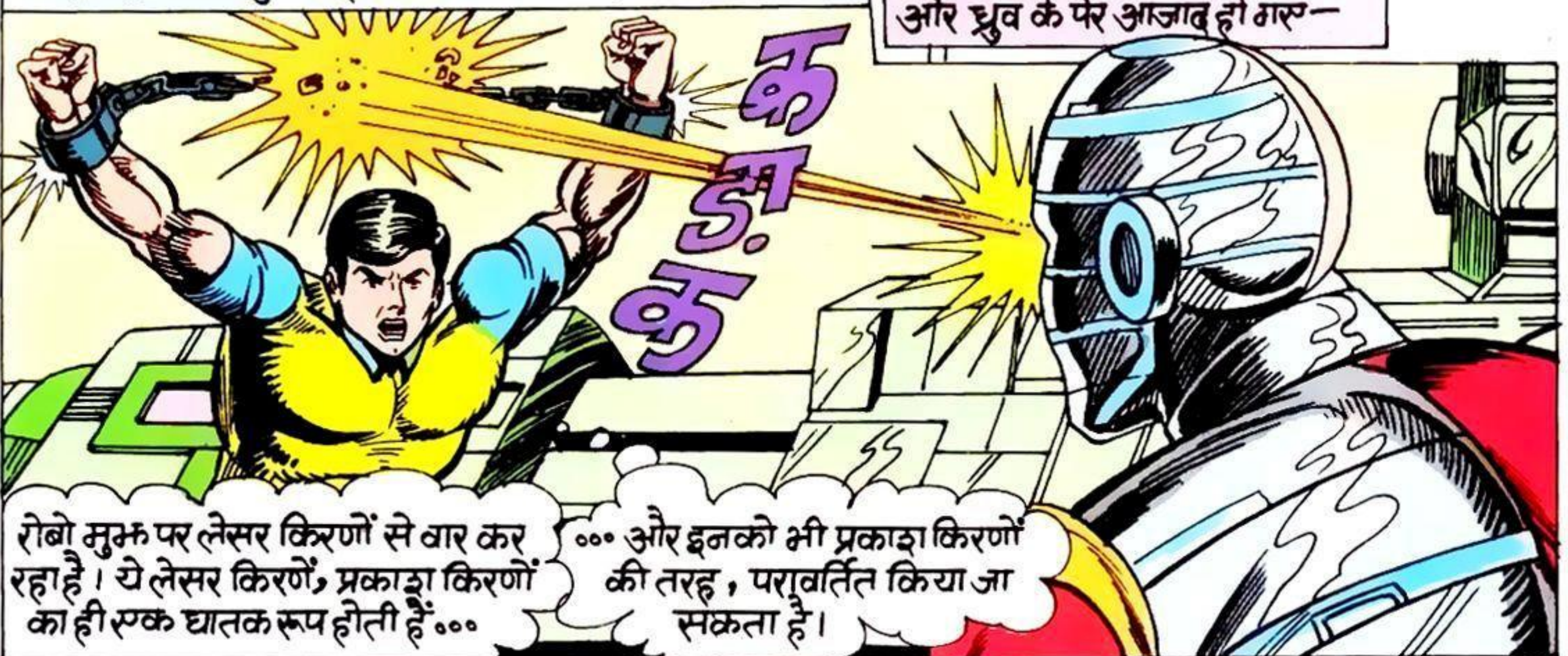
इनको परावर्तित करने का काम मेरी हथकड़ियों की चमकती हुई सतह करेगी।

और अगर मैं इन किरणों को सही कोण पर परावर्तित कर सकूं •••

••• तो मेरा बचाव ही मेरा हमला बन जाएगा!

आह!

मेरी लेसर किरणों ने ही मेरी 'लेसर आई' को नष्ट कर डाला।

कड़ड़ंड़ाक

मेरा सबसे बड़ा हथियार नष्ट हो गया•••

ईयायाया!

तोड़.

अब तुम्हारा जबड़ा भी नष्ट होने वाला है, रोबो!

ध्रुव के बेरहम वारों ने•••

तड़ाक

आई!

•••रोबो को जमीन पर ला पटका—

रोबो की कहानी एकदम सच्ची थी, धनंजय ! लेकिन उसने ध्रुव के रूप में ...

... एक दूसरे लड़के 'टोनी मैल्काम' को मारा था।

उसकी शिनाख्त मैंने उसकी पोशाक पर लगे टेलर के लेबिल के जरिए की थी !

उसका पता ढूंढकर मैं उसके रहने के स्थान पर गया । वह अकेला रहता था—

मुझे वहां पर उसके हाथ की लिखी डायरी मिली । उसमें उसने सारी बातों को साफ-साफ लिखा था । दरअसल वह मेरा खास प्रशंसक था, और मेरे जैसा ही 'क्राइम-फाइटर' बनना चाहता था—

उसने मेरे जैसी पोशाक भी सिलवा रखी थी । अखबारों में मेरे कारनामों के स्थान को पढ़कर, वह अगले दिन उसी जगह छिपकर जाता था—

और मेरी तरह नकल करने की कोशिश करता था—

ऐसे ही वह ग्रैंडमास्टर रोबो से टकरा गया । रोबो अंधेरे में उसकी शक्ल नहीं देख पाया । और उसने टोनी मैल्काम को ध्रुव समझ कर उसका खात्मा कर दिया—

मैं जानता था कि टोनी मैल्काम की हत्या का सही-सही ब्योरा सिर्फ असली हत्यारे को ही पता होगा।
और वह हत्यारा ग्रैंडमास्टर रोबो निकला...
...सुप्रीमा की गवाही सुनने की जरूरत ही नहीं पड़ी।
तुम्हारी स्कीम सचमुच कमाल की थी, ध्रुव!
...लेकिन अभी हमारा काम पूरा नहीं हुआ है! अभी कई माफिया बॉसों और सुप्रीमा को उनके सही ठिकानों पर पहुंचाना है।
फिर देर कैसी, धनंजय! आओ चलें!
और फिर- राजनगर में, भारत में, दुनिया में खुशी की एक लहर दौड़ पड़ी-
हुर्रें...
सुपर कमांडो
ध्रुव जिंदा है... जिंदा है...
जिंदा है...
समाप्त: